राइ छिपी पिय अंग सुहागी रहैं । बड़भागिनि ओई अहैं बरसातमें जे पिय कराठ सों लागी रहैं ८३ धाये हैं आज घने घन घोर सो बोलत मोर बियोग जनाये । जनायके मोह बियोग सों योबन मारत कामके बाण चढ़ाये । चढ़ायके लायेहैं श्यामघटा बदरा चहूँ ओर महा झरि लाये । लायके मोहिं कहां बिलमें अजहूँ नहिं पीउ बिदेश सों धाये ८४ ॥ कबित्त ॥ घोर घन घुमड़ि घटानकी घुमगडनमें बीजुरी प्रचगड नेक धीरज धरीरहो । दादुर चकोर मोर शोर चहुँओरन ते निशि दिन एक झर बरसै हरीरहो । उर लपटाय सुखपाय नवनीत संग जंघजुरि केलिरस रंगमें भरी रहो । गरज हमारी कर दरज दिलोंदे बीचप्यारी नेक ओर घरी द्वैक तो परी रहो ८५ उमड़े सरित सर झारे बेशुमारे अति बहे नदनारे छहरारे जल थलपै । मरुत हहारे तरुवान तोरिडारे पातपात झोरिडारे जारिडारे जवा-दलपै । पैदल सवारन चलत घाट बाटनमें भरोहै चहल बन्दि रहल गहलपै । कन्त बिन कामिनी भयामिनी अटापै लगे घेरेरहे घटा नेक मेरेहि महलपै ८६ ॥ सवैया ॥ चातक मोर करैं अति शोर उठी घन घोर है श्याम घटा । चमकै बिजुरी अति जोर भरी अरु लागिझरी लिये ठाट ठटा । शोक भरी पछतावै खरी बिरहागि जरी शिरखोले लटा । कराहिके हाय करै पछिताय वह हाफ़िज देखिके सूनी अटा ८७ गरजी पुनि घोर घटा सजनी रजनी दिन ऊबत भीतरजी । तरजी तड़िता

नभ शोर सुने सुमन मन कान भयो मरजी। मरजी हित हाहा करी कितनी अरजी न कबूल कियो बरजी। बरजी नहिँ मानत मेरी भटू भयो चातक सों जियको गरजी ८८ आयो अषाढ़ सुनो सजनी रजनी दिन घेरि घटा घन छायो। छायो बिदेशहि रामचरित्र अँदेश लग्यो है सँदेश न पायो। पायो भले अपने बश कैधौं कहूँ कोऊ सौतिन सेज लुभायो। भायो कहा उनके मनमाहिँ कि पावस आयो पियानहिँ आयो ८९ लागो अषाढ़ सबै सुख सोवत मैं जियमों बिरहादुख बोई। सावन मों सब केलि करैं मैं अकेली परी सँग साथ न कोई। कैसे जियों घर हे सजनी फिरि भादवँ में घनश्याम न होई। कौनसी चूक परी बिधना बरसात गई बरसात न सोई ९० ॥ कवित्त ॥ सावन सुहावन मनभावनकी राह देखि सगुन जगावैं कब नाह घर आवैंरी। देखि घन घटा चित चौगुनो चकित होत छातिन बिच पातिन की लीकें करि जावैंरी। चूनरी कुसुम्भ रँग सोहैं शिर सखियनके झूलतीं हिँडोरा बिरहिनिनको लजावैंरी। जिया हुलसावैं त्रियालोने गीत गावैं हम रामचन्द साहबकी साहिबी मनावैंरी ९१ ॥ सवैया ॥ यह सावन शोक नशावन है मन भावन यामें न लाजैं भरो। यमुना पै चलौ सुसबै मिलिकै अरु गाय बजायकै शोक हरो। इमि भाषत है हरिचन्द पिया अहो लाड़िली देर न यामें करो। बलि झूलौ झुलाओ झुको उझको यहि पाखै पतिव्रत ताखै धरो ९२ ॥ कवित्त ॥ श्याम घटादेह

जाकीदंतपदश्वेत जाकीपौन पुरवाईकीपुकार दरसतु है। मन्द मन्द दामिनि सदाईनि की भूल तापै अंकुश छटानन की कौन सरसतु है । ठाकुर कहत तापै मैन असवार भयो हूलतहै घरीघरीपौन भरसतु है। प्रेमको सँघाती साथी बालम बिदेश छायो छातीपर घूमिघूमि हाथी बरसतुहै ९३ सुन्दर सुखारे अनियारे कारेकारे घन धारे बहु भेष धाम धारे बरसतु है। तरुण तरारे न्यारे न्यारे उदगारे पौन दादुर दगारे धुनि धारे दरसतुहै। पीपी के पुकारे पपीहराउ प्यारे प्यारे सारे दुन्दुभि धुकारे तो अनङ्ग सरसतुहै। अचरज यामें कहु कौन भुवनेश जोपै श्याम मिलबे को मन मेरो तरसतु है ९४ ॥ सवैया ॥ दादुर बोल मचै चहुँओर सुने बिरही हिय ताप बढ़ावत। पावस की झमकी रतिया पति की छतिया बिन कौन बितावत। बोलहिंगे अलि कुञ्जनमें बनके मुरवा धुनि टेर सुनावत। काह कहीं सखि नाह बिना अब ये बदरा बदराह मतावत ९५ आवत देरभई बरषै न लगे करषै पिक चातक दादर। मोर सशोर लगे घरषै चित चोर सने सुख सौति स-हादर। बन्दि उपाय बनै न किये नहिँ फारिकै लाज समाज कि चादर। बाढ़ धरायकै देती जराय ये दायक गाढ़ असाढ़के बादर ९६ ॥ कवित्त ॥ बाजत नगारे घन ताल देत नदीनारे झींगुरन झांझ भेरी भृङ्गन बजाईहै। कोकिल अलाप चारी नीलकण्ठ नृत्यकारी पौन बन धारी चाटी चातक लगाईहै। मणिमाल जुगनू मुवा-

रक्त तिमिर थार चौमुख चिराग चारु चपला जगाई है । बालम बिदेश नये दुखको जनमभयो पावस हमारे लायो बिरह बधाईहै ९७ हरित हरित हरि लेत मन बेली बन सघन घटान घन घिरि घहराने हैं। बोलैं चहुँ ओर कीर कोकिल पपीहा मोर कुञ्जकुञ्ज गुंजैं अलि पुंज मनमानेहैं। अंकुर बिछाय हित कीनी मरकत मणि तामें इन्द्रबधू जाल लाल सब जाने हैं। दिशि दिशि देख द्युति चाह मनभावन की सावन की सबजीमें सबजी भुलाने हैं९८ कारेकारे बादर सो बरसत आदरसों दादुर पपीहा पिक उर न समातके। ठौरठौर सरस सरोवर अथाह भये गुंजरें मधुप पुंज पातें जल जात के। हरी हरी दूब छोटी तापर बिराजैं बुन्द उपमा बनीहै मित्र निरखि सिहात के। सावन सनेही मनभावन रिझावन को बोतिन गुथाये हैं दुलीचा सकलात के ९९ मानो सक्र चोप तम्बू ठाढ़ो है सुरुख श्याम डोरी सखतूल तामें लागतसुहावने। कहै शिवराई शोर करत कलापी पापी झिल्ली झनकारत बिरह उपजावने। ताही समै प्यारी सखियान ते कहत बात लाल बिन घरी घरी युगन बितावने। काम बादशाह के हुकुमते फराम मानो सबुज बनातके बिछाये हैं बिछावने२०० सावन सजल घन बरषै अखण्डधार चहूँ ओर नार खार ताल झिलि भरिगे । झिल्ली झनकार रव दादुर अपार मोर शोर कुहुँकारन उदार कबि करिगे। हरी हरी भूमि तापै इन्द्रबधु फैलिरहीं

उपमा सुताकी रसरास चित्त धरिगो। सबुज बनात पर मानो मैन जौहरीकी गाँठिते उचटि पुंज मानिक बिथरिगो १ बादर उतङ्ग अङ्ग डोलत अनङ्ग भरे बगन कतार दन्त दीरघ सँवारेहैं। चरखी चमक तरकत औ गरजगुंज बरषै मदन निशि नीरके पनारेहैं। सोमनाथ प्यारे नँदनन्दके बिरह जान ब्रजमें उमङ्गन करोर हन कारेहैं। आये घन भारेमैं बिचार उर धारे येरी कारे रङ्गवारे ये मतङ्ग मतवारे हैं २ पावस विवश निशि बासर निशासे भासे भन पजनेश देशदेशन सवाँरे से। धूम रङ्ग धीरे धीरे धराधर शृङ्गन पै धावत अधर धूर धुन्ध गतवारेसे। छुटे बादवाननि बिलन्द ज्यों जहाज मानो आवत हिलत नित नेह नद वारेसे। होती घनी धूमें धराधरनि की धूमै घेरि घेरि घन घूमै झूमै गज मतवारेसे ३ नाचत कलापी जूह संगलै कलापिनिको झिल्लिनकी भीर झनकारके जमकि रही। दादुरकूरत शोर घोर चहुँ जोरन सों देखु बगपाँति बिरहीन को धमकि रही। कहै हनुमान मान छोड़ि प्राणप्यारी जाय मोहनसों मिलि देखु लतिका लमकि रही। छाय छाय मेहरहे चावन सों ब्योम माहिं धाय धाय चहूं ओर चपला चमकि रही ४ मेचक कवच साजि बाहन बयारि बाजि गाढ़े दलगाजि उठे दीरघ बदनके। भूषण भनत शमशेर सोई दामिनिहै हेत नर कामिनि के मानके कदन के। पैदर बलाके धुरवान के पताके देखि घेरि घेरि जात चहुँ ओराहँ सदनके। नकर नि-

यादर पियासों मिलि सादर ये आये बीर बादर बहा-
दरमदनके ५ कैसीकरोंबीर यह घेरिदिशाविदिशानि
फेरि नभमण्डल घमण्ड घनछायोरी। पीड़ित पियास
परमातुर पपीहापापी पीउपीउ कहि तन अतनजगायो
री। कहतकिशोर तैसी पवन झकोरनसों मोरन त्यों
महत मलार सुर गायोरी। बड़े बड़े बुन्दन बिलोकि
बारिधरबीर अबहीं बरसिगये। फेरि झपिआयोरी६
मोरनके शोरसुनि पिककीपुकार तैसी चातकचिकार
सुनि सूनी श्याम यामिनी। जुगुनू जमक देख झिल्ली
की झनक लेख भयसोंबिशेखशेख डरें गजगामिनी।
झरन झरतनीर कम्पतशरीर येरी बालमबिदेशधीर
धरें कैसे कामिनी। मारे डारें मदन मरोरे डारें दादुर
ये दावे आवें बादर दबाये आवें दामिनी ७ मानगढ़
घेराहोत गरज अरेरा होत दादुर दरेरा होत जेरा होत
याम को। पिक भटभेराहोत धकपक हेराहोत गरब
अरेराहोत बेराहोत साम को। पवन सरेराहोत धनुष
धरेराहोत बुन्दन गुरेराहोत खेराहोत बामको। बीजु-
री उजेराहोत कौंधा चकफेराहोत घनन को घेराहोत
डेराहोत कामको ८ बिज्जुकी छटामें घनघोरकी घटा
में बकपाँति की प्रभा में कैधैं नैननि लगायेना।
दादुर कलामें जोरशोर सरनामें पीउ पीउ पपिहामें
हामें शोरसरसायेना। शक्रउज्जु जामें नीलमणिसी ल-
लामैंभूमिसोहै ठामठामें तामें कामैंतेजतायेना। मोर
हरखामें नदीनदतरखामें अजहूं लौं परखामें बरखामें

हरि आयेना ९ झरकी झरनझार झरसी झरत अंग झंझाकी झकोर झुकि झपट झरीनमें । छटाकी उछटि छवि छपन छपाकरकी छायरही छनदा सुहाई दिनदीनमें । चातक चिकार चकचौंधा चारु चहूंदिशि चकित चकोर चकवानके बिहीनमें । आवसपरे हैं पूर्यीकावस परायेदेश पावसमें थ्यावस रह्यो न बिरहीनमें १० कैधौं वहिदेश घनघुमड़ि न वरसत कैधौं मकरन्द नदीनद पथ भरिगे । कैधौं पिक चातक चकित चक्रवाकबाक मत्तभये दादुर मधुप मोर मरिगे । मेरेमनआवत न आली प्यारे आवतहैं कामक्रूरनिकर महीतेधौं निकरिगे । कैधौं पञ्चशर हर फेरके भसम कीन्हो कैधौं पञ्चशरजूके पांचौशर सरिगे ११ कैधौं उपवन घनघेरिन घुमड़िआये कैधौं कीच भूतल में प्रगटी नहीं नई । कैधौं दबि दादुर रहेहैं डरव्यालन के कैधौं पापी पपिहा पिया की टेर नारई । घासीराम कैधौं पिक बाजनको त्रास मान्यो कैधौं वहिदेशवोर पावस नहींठई । कैधौं काम श्यामजूके तनते निकरि गयो कैधौं मेघ जूझे कैधौं बीजुरी सतीभई १२ कैधौं मोर शोर तजि गयेरी अनत भजि कैधौं उत दादुर न बोलतहैं ये दई । कैधौं पिक चातक महीपकाहूमारि डारे कैधौं बकपाँति उत अन्तर्गतिह्वै गई । आलमकहतआली अजहूं न आयेपिय कैधौं उत रीत बिपरीत विधि ने ठई । मदन महीप की दोहाई फिरिबेते रही कैधौं मेघजूझे कैधौं बीजुरी सताभई १३ ओढ़े नील

सारी घन घटा कारी चिन्तामणि कुचन किनारीचारु चपला सोहाई है। इन्द्रवधू जुगुनू जवाहिर की जगा ज्योति बगमुकतान माल कैसो छबि छाई है। नील पीत श्वेत वर बादर बसन तन बोलत सुभृङ्गी धुनि नूपुर बजाई है। देखिबेको मोहन नवल नट नागर को बरषा नवेली अलबेली बनि आई है १४ कारे कारे धुरवा चिकुर चारु चमकत चञ्चला वरङ्गना सु अति अलबेली है। पचरँग अम्बर अडम्बर पटम्बरनि मुद्रित वदन चन्द सुखद सहेलीहै। जुगुनू जमाति नैन बगुला कतार हार केकी धुनि नूपुर अनूप रसरेली है। कबि शिवदास दिन दूलह मदनभूप बानक बनक बनी बरषा नवेलीहै १५ चंचलासी चौंकति चहूँघा आँशु बरषत फैले तम केशकीन सुधि उरधारी है। इन्द्रगोप झारी है अँगारी बिरहागि बारी भयगा जराऊ ज्योति रिंगन बिसारीहै। शङ्कर बखानै ह्वै पपीहा पीव पीवरटै लाज हंस जामें गति दूरकी निहारी है। शोभा लखि न्यारी मन आपने बिचारी बरषाहै यह भारीकी बियोग बारी नारीहै १६ चूनरी सुरङ्ग साजि सूही अङ्ग अङ्गन उमङ्गनि अनङ्ग अङ्ग अङ्ग उमहतहैं। झुकि झुकि झांकति झरोखनते कारीघटा चोहरे अटा पै बिज्जु छटासी जगतहैं। द्विज देव मुनि सुनि शबद पपीहन के पुनि पुनि आनँद पियूषमें पगतहैं। चावन चुभीसी मन भावनके अङ्कुर तिन्हैं सावन की बूंदें ये सुहावनी लगतहैं १७ रसरँग भरे दोऊ उज्वल अगापे खरे हरे

हरे हेरत सुहेत हिये पटि उठैं। दमकि दमकि ज्ञाति दामिनी चहूंघा चारु चमकि चमकि चूनरी में अद्ध ठटि उठैं। कहै ऋषिनाथ मोर दादुर करत शोर जोर जोर ज्ञमकि पपीहा पीउ रटि उठैं। घुमड़ि घुमड़िघन घिरि घिरि आवें मोद उमड़ि उमड़ि दोऊ छतियां छपटि उठैं १८ घने घन घेरि घेरि उमड़ि घुमड़ि आये ऐसो तम छायो मानो भूमि परसतहैं। चपला चमकि चहूं ओर चारु चारे चित तामें बकपांतिन के पुंज द· रसतहैं। इतै झरिलागी उतै अनुरागी भये दोऊ कैसे हाव भावनमें मैनसरसतहैं। सूरज सुकबि आजु लखें पिय प्यारी संग लाल बँगला में लालरंगबरसतहैं १९ आवत कदम्ब कुसुमनको परागपूरि सीरी पौन लह-लही ललित लतान की। घोरें घन घेरि घेरि पावस अँधेरी पिक कोकिनकी टेर शूनि अरि होत प्रानकी। ऐसे समय कुञ्जभौन आनँद उछाह बाढ़े ठाढ़ेढिग ल-लना मनोरथनि भानकी। सोहन मचाई बात करत रचाई दोऊ छबिसों बचाई छोटें ओट छतनानकी २० चपला चमक घन गरजनि साज संग सहित अनंग के तरंग धरिबो करैं। शीतल सुगन्धयुत पवन सहायकरि बसुधा अपार जलधार भरिबो करैं। चातक पुकारे मोर शोर करि हारे वन झिल्ली झनकारे हर भाँति अरिबो करैं। पियके प्रयङ्कमें निशङ्क ह्वै भरति अङ्क अब घन घोर चहुँ ओर करिबो करैं २१ पकरे उरो-जन के सकुच नवाय ग्रीव नाहीं नाहीं कहि कहि बातें

अरतीहैं जे । हरी हरी डारन में परे जे हिंडोरा तिन्हें देखि झूलिबे को अनखाय लरतीहैं जे । कहै हनुमान तेई धन्य सुन्दरीन माहिं पैन्ह लाल मारो हिये मोद भरतीहैं जे । सावन की हेरि घटा बैठी रंग रावटी में भावनकी गोदमें कलोल करती हैं जे २२ अवली अलीनकी अनोखी नवला लैसंग चोखी रतिहूतें राजै आनँद अथोरे पै । साजे बिन टूषणाके भूषणाको अंगन में औरही अनूप आब आई मुख गोरेपै । कहै हनुमान घरहाईके सकोचनते हेरति न लालै भई शोचनकरोरेपै । हूलै हिये सौति के अतूलै छबि धारि झूलै मन सों पियाकी गोद तनसों हिंडोरे पै २३ हेरिकै बहार बरषाकी बलि बार बार आई बन बाग बीच मदन मरोरे पै । आस पास गावैं मंजु घोषासी सहेली सबै मंजुल मलार मन मोहैं बरजोरे पै । कहै हनुमान ता समान में शचीहै कहा जाके रूप सोहैं रहै रतिहूनिहोरेपै । हीरन जटित चारु चाँदीको तखत डारि बैठी बाल झूलतिहै हेमके हिंडोरे पै २४ जाके मुखचन्द सोहैं लागतहै मन्द चन्द कुन्दन ते सुन्दर सलोनो जासु गातहै । औरै छबिछाय रही अंगनमें अंगना के अंचल ते उघरि उरोज दरसात है । कहै हनुमान प्रेम पूरणा उघरिपरयो छपत न कैसेहू छपाये सरसात है । ज्यों ज्यों मचकीन को मचाय बाल झूलति है त्यों त्यों खरो भूमें लाल लपि लपि जातहै २५ नाजुक नबेली अलबेली लै सहेली संग आई बर बाग बीच अधिक

निहोरे पै । हरी हरी क्यारिन में डोलैं गलबाहीं दिये बोलैं बैन मधुर सुभाव भाव भोरे पै । कहै हनुमान ज्योंहीं झूलिबेको कीनोमन त्योंहीं मान छाड़ि है सुहाई सुख गोरे पै । झूलति हमारे हिये हूलतिहै सौतिनके फूलति कलीसी बाल बैठी जो हिंडोरे पै २६ करत अकाश बारि बाइक बिलास तैसे बुंद परैं बसन कुसुम्भी रंग बोरे पै । क्षगा छबिछटा तैसी घटा घन घहरात हीरन के भूषगात्यों सोहैं तन गोरेपै । गिरिधरदास लिये गिरिधर लालसंग झुकति झपकि जाति थोरेहू झकोरे पै । हूलति है शूल सुख सौतिउन मूलतिहै फूलति है झूलतिहै हेमके हिंडोरेपै २७ रहसि रहसि हँसिहँसि के हिँडोरे चढ़ी लेति खरीपैंगैं छबिछाजै उकसनमें । उड़त दुकूल उघरत भुज मूल बढ़ी सुखमा अतूल केश फूलनि खसनमें । औ झूलहू देखि देखि भये अनिमेष श्याम रीझत बिसूरि श्रमशीकर लसनमें । ज्यों ज्यों लचि लचि लंक लचकत भावती को त्यों त्यों पिय प्यारो गहै आँगुरी दसनमें २८ प्रेममद पागे अनुरागे लाल बागे दोऊ लागे भले लोचन को झूलत हिंडोरना । लोनीहै चपल द्युति चोरनै चुराय चित चन्द मुखी चंचल चयन गुन बोरना । ज्यों ज्यों प्राणपति परिरंभण करत त्यों त्यों भावती मूरति यहै शोचके झकोरना । शिरस सुमनहूते कोमल किशोर उर कठिन कठोर कहूँ गड़ै कुचकोरना २९ रागभरी भीजी सी हिंडोरे झूलैं सूहे पट प्यारी मुख चन्द पै चकोर

झगारतहैं। भूधर सुकवि बोर, कंठ माहिं मणि माल बाजूबन्द किंकिणी कनक नगरत हैं। गहे कर डोरी ज्योति ज्योति जीति लालनसों सौरभ समन भौंर भ्रम डगरतहैं। कहूँ फूले फूल कहूँ उड़त दुकूल कहूं उर उघरत कहूंवार बगरत हैं ३० बैठी है हिंडोरे बीच प्र-खत सुकंचनके जेब सरदारी की सजी जन झुलावहीं। दुहूँ ओर चँवर डुलावैं सखी चौंरदार सायबान संग सो झुकायेहीं झुलावहीं। खुलेवार हारन जवाहिरहू जगमगात देखैं सोहैं लाल ठाढ़े डीठि न डुलावहीं। नागर सुगन्ध की झकोर उठैं पैंग संग झूलैं प्यारा साहिब मुसाहिब झुलावहीं ३१ फूलन के खम्भा पाट पटरी सुफूलनकी फूलनके फन्दमें फंदेहैं लाल डोरेसें। कहै पदमाकर बितान तने फूलनके फूलनकी झाखर यों झीलति झकोरेमें। फूलरही फूलन सुफूल फुल-वारी तहाँ फूलईके फरस फबे हैं कुञ्ज कोरे में। फूल झरी फूलभरी फूलजरी फूलनि में फूलईसी फूलति सुफूलके हिंडोरे में ३२ यमुनाके तीर भीर भई है हिं-डोरना पै दूरहीते गहगही गति दरसत है। गान धुनि मन्द मन्द आवतिहै कानन में बीच बीच बंशी धुनि प्रान परसतहै। देखिकारे द्रुमन लतान मांझ दामिनी सी पट फहरात पीत शोभा सरसत है। हाहा चलि नागर पै हिय तरसत आली आजु वा कदम्ब तरे रंग बरसतहै ३३ कूकन मयूरनकी सुरधाके धुकनकी झू-कन समीरनकी खसन प्रसूनकी। दमकनि दामिनि

की भामिनिकी रमकनि झमकनि नेहकी करोररति हूनकी। नायकी सों मानिनकी झोंकैं चढ़ियाननकी हँसि हँसि झुकि झुकि सामन दुहून की। उड़न दुकूलनकी छबि भुज मूलन की काम मन हूलन की झूलन दुहूनकी ३४ बरसै सघन घन सावन सुहाई बूंदैं कुंजमें पवन चलै लहर झकोरे मैं। कुहु कै पपीहा मोर दादुर करत शोर गुंजत भवँर बिज्जु नचत सुजोरे मैं। आनँद कहत सखी चहूँधा चँवर ढारैं हाथन लगाई आगो लालरंग बोरे मैं। लहकि ढरकि जाती अलकैं कपोलनपै लचकि लचकि झूलैं मचकि हिंडोरे मैं ३५ घाँघरे की घुमड़ उमड़ चारु चूनरी की पायन सलक मखमल बरजोरेकी। भृकुटी बिकट छूटी अलकैं कपोलन पै बड़ी बड़ी आँखिन में छबिलाल डोरेकी। तरिवन तरल जराऊ जरबीले जोर स्वेदकन ललित बलित मुख मोरे की। भूलत न भामिनी की गावन गुमान भरी सावन में श्रीपति मचावनि हिंडोरे की ३६ चूनरी की चहक चमक चारु चोपन की चुरियाँ की चुहुरि चितौनि चख चोरे की। कहै पदमाकर मनोज मदमाती मंजु मेहँदी की महक मजेज मुख मोरेकी। गोला गर्व गँजन गुलाई गोल गालन की गहगही गालिब गोराई गात गोरेकी। हरित हरा की हीर हारकी हमेलहू की हलनि हियाई हरै झूलनि हिंडोरेकी ३७ सघनघटान छबिछ्योति की छटान बीच पिकनकी रटान ज्योति जोमन जुड़ैयरै। हारहिये

हरित नदीन नद भरित झरीन झर झरित सो बरसि धुईपरै। ऐसेमें किशोरी गोरी झूलति हिंडोरे झुकि झुकनि झकोरैं फैल फूलन फुईपरै। कीजिये दरश नँदनन्द ब्रजचन्द प्यारे आजुमुख चन्दपर चूनरि चुई परै ३८ झूलिबेको रसबस नवल हिंडोरे चढ़ी तासमन कोऊ सुर किन्नर असुर को। कहै घनश्याम अभि- राम दृग चंचल सो अंचल उड़त बरसौं को छबि उर की। ख्याल के मचतही लचत उर बारबार मानो बिपरीति रति सीखबेको दुरको। उछरि उछरि चोटी पीठपै परत मोटी खोटीके परेते ज्यों चमोटी काम गुरकी ३९ फूली फूल बेलीसी नवेली अलबेली बधू झूलति अकेली कामकेलीसी बढ़ति है। कहै पद्मा- कर झमंक की झकोरनसों चारोंओर शोर किंकि- नीनकोमढ़तिहै। उरउचकाय मचकीनकी मचामचसों लंकहि लचाय चाय चौगुनो चढ़तिहै। रति बिपरी- तकी पुनीत परिपाटीमनो हैंसनि हिंडोरेकी सुपाटी में पढ़तिहै ४० सावन सखीरी मन भावन के संगवसि क्योंनचलि झूलति हिंडोरे नवरङ्गपर। कहै पद्माकर सुयोवन तरंगिनते उमँगि उमंगत अनंग अंग अंगतर। चोखो चूनरीकी चारोंतरफ तरंग तैसी तंग अंगियाहै तनी उरज उतंगपर। सौतिनके बदन बिलोके बदरङ्ग आज रङ्गहैरी रङ्गतेरी मेहँदी सुरङ्गपर ४१ दोऊ रूख मूलझूल झूलमखतूलझूला लेतसुखमूलकाहि तोयभरि बरसात। छूटिछूटि अलकैं कपोलनपै छहरात फहरात

आंचर उघारजते उघरिजात । रहोरहो नाहीं नाहींअब ना झुलाओ लाल बबाकीसों मेरेये युगलजानु थहरात । ज्योंहींज्यों मचत लचकत लचकीलो लंक शंकनिमयंक मुखी अंकनि लपटि जात ४२ झूलत हिंडोरे प्रिया प्रीतम यमुन तीर बोलें पिक कीर छबि छाजत लतानकी । बांधेपाग पचरंग ओढ़े चूनरी सुरंग कंचु की दुरंगबेंदी कोरिद्युति भानकी। ब्रजबधू गावैं झुकि झुकिके झुलावैं श्यामा श्यामको रिझावैं होतबरषा सुगानकी। घोर घनगाजै बगपांतिहू बिराजै ताकेबीच बीच बाजै बंशी सुन्दर सुजान की ४३ झूलत हिंडोरैं उठैं छबिकी झकोरैं मन माधुरीमें बोरैं पानखान मुसकानकी । जोरैंदृगकोरैं हिये सबके मरोरैं मानो शोभा चोरिरहोरैं द्युति पट फहरानकी । योवन के जोरैं झूला थामत निहोरैंहूंन चोप दुहूं ओरैंछूवैं फुनग लतानकी। बेणीहू हिलोरैं फूलछोरैं हार डोरैंलखि आली दृग तोरैंसुधि भली गान तानकी ४४ कौनपरी चूकमोसों एरी मेरी बीरजासों कीनी मन मोहनने ऐसी हायघतियां । काये परदेश पायों कछुना सँदेशयेही जियमें अंदेश कबों भेजत ना पतियां । कामकी सताई बिन रोयकै बिताओं लाल कैसे कलपायों पीर होत अति छतियां । तापे कल पावनको बिरह बढ़ावनको आई दुखदाई फेरि सावनकी रतियां४५ आयोपुनि पावस अमावस निशाभोदिन छिन बिन प्यारे कहि भांतिन बितायहैं। किरचैं करेजहू की कोकिलें करन लागी

मोर शोर सुनि किमि चित्त ठहरायहैं। बेदरदी बैरी बबदरा बड़े बुरे नित प्रति तासों प्राण कैसे कै बचाय हैं। परत न एकौ पल कल लाल क्यों हूँ हाय काके गरे लागि काम तपनि मिटायहैं ४६ ॥ सवैया ॥ ऋतु पावस आइगो भागनते सँग लालके कुंजनमें बिहरो। नहिं पायहौ औसर और युवत्व कहा अबलाज लजाइ मरो। गुरु लोग औ चौचँद हाइन सों बिरथै कहिकारण बीर डरो। चलि चाखै सुधा अभिलाखै करो यहि पाखै पतिव्रत ताखै धरो ४७ ॥ कबित्त ॥ घन को घमक औ बनक बकपांतिनकी बीजुरी चमककार बालसी दिखातरी। ललित लतान लखियत है नदान और कहे परमेश त्यों बहत बेश बातरी। मोरन को शोर चहूँ ओर होत ठौर ठौर दादुरकी दन्दघोर करैं तनु घातरी। सुख सरसावन लगेरी लोग गावन को बिना मन भावन न सावन सुहातरी ४८ डोलै पौन परसि परसि जल बूंदन सों बोलै मोर चातक चकित उठी डरि मैं। कहांलों बराऊँ दई मारे मैन बाणनसों थकि रही केतिको उपाय करि करि मैं। दत्त कबि प्यारे मनमोहन न पाऊँ कहौ मन समझाऊंरी कहा लौं धीर धरिमैं। छाये मेघ मगन सुहाये नभ मण्डल में आये मनभावन न सावन की झरि मैं ४९ मद मई कोयल मगन ह्वै करत कूकैं जल मई मही पग परते न मगमें। बिज्जु नाचै घनमें बिरह हिय बीच नाचै मीचु नाचै ब्रजमें मयूर नाचै नग में। श्रीपति सुकबि

कहै सावन सुहावनमें आवन पथिक लागे आनँद भो अँगमें । देह छायो मदन अछेह तम छिति छायो मेह छायो गगन सनेह छायो जग में ५० भूली किधौं ह्यां की पौर बाढ़ीहै उहां की भरै नैन झरना की सुधि आय उर वाकी है । चपला चलाकी करै नटकी कला की तैसी दौर बादराकी ओधुकार धुरवाकी है । हैन कछु वाकी औध आसरा निशा की तामें आइ परै डांको ये झकोर पुरवाकी है । टेर पपिहा की करै शेल समताकी डरै करै उर झांकीमे पुकार पुरवाकी है ५१ कंठ कित होत गात विपिन समाज देखे हरी हरी भूमि हेरि हियो लरजतु है । निपट चवाई माई बन्धु जे बसत गावँ दावँपरे जानिके न कोऊ बरजतुहै । एते पै करन धुनि परत मयूरनकी चातक पुकारि तेह ताप सरजतुहै । अरजो न मानी तू न गरजो चलत बेर एरे घन बैरी अब काहे गरजतु है ५२ पौन हहराय बनबेली थहराय चारु लहराय सौरभ कदम्बन की सानते। झिल्ली झननाय पिकचातक बिचारउठे बिज्जु छहराय छाय कठिन कृपानते । कहै करनेश चमकत जुगुनू नचाय मेरे मन आई ऐसी उक्ति अनुमानते । बिरही दुखारे तिनपर दईमारे मानो मेघ बरसतहैं अँगारे आसमानते ५३ ॥ सवैया ॥ कर कागद लैके वियोगिनि नारि लिखै इमि प्रीतम को पतियां । यहि पावसमें परदेशछये बलिहारी तुम्हारी शिलाछतियां । सखियां पियसङ्ग हिंडोरे चढ़ीं कहैं गीतमैं गाभीभरी

बतियां । अतिकारी डरावनी सांपिनिसी मोहिं ग्रा-
सति सावन की रतियां ५४ सखियां कोउ झूकते झू-
लनके डरि लागहिं प्रीतम की छतियां। कोउ डोरधरे
कर एक रह्यों एकरो पीकी बचावतिहैं घतियां । कोउ
गाइ मलार रिझाइरहीं अरु कोउकरें रसकी बतियां।
कवपीर निवारिहौ मोंहियकी पियजातीहैं सावनकी
रतियां५५॥कवित्त॥धीरगयो हीको सुनि शोर बरहीको
बीर नाम लैके पीको या पपीहा आनि पीको है।
मेघ अवली को घोर पौन अवलीको बहै मार अवली
को हायमार अवलीकोहै । नाहसे पथीको कहूँ आइबो
नहीको कहै देखि अवनीको रँग लागत न नीकोहै।
डारै अधजीको मोहिं कीने अधजीको यह जानत न
जीको भेद हरत न जीकोहै ५६ पीउ पीउ करन मिलैं
जो मोहिं आज पीउ सोने चोंच चातक मढ़ाऊँ अति
आदरन । कठिन कलापिन के कंठ न कटाइडारों देत
दुख दादुर चिराय डारों दादरन । मोतीराम झिल्ली
गन मन्दिर मुँदाइ डारौं बधिक बुलाइ बांधैं बन की
बिरादरन । बिरहा की ज्वालन सों जिरह जराइडारों
श्यामन उड़ाऊँ बैरी बेदरद बादरन ५७ लगो सो लगाई
लङ्कखेहनि खराबकरौं मारि करौं मोरन अहार मार
जारको । सुकवि निधान कान आंगुरिन मूंदि मूंदि
सुनिहौं न घोर शोर झिल्ली झनकारे को । भेकनको
भीर महसानन मिटाय डारौं मेटिडारौं गरब गरूर
घनकारेको । पाऊँ जो पकरि कहूँ जाल सों जकरि

तन फोड़ा फोड़ा करों या पपीहा दई मारेको ५८ कै धौं वा विदेश घन घुमड़ि नछावैं चहूँ कैधौं वा विदेश कहूँ दामिनी न दरसै । कैधौं वा विदेश मोर शोर ना मचावैं जोर कैधौं वा विदेश वेग बोलिकै न हरसै । कैधौं वा बिदेशमें न झींगुर झनक झुण्ड कैधौं वा विदेशन जुगुनू ज्योति सरसै । कैधौं वा विदेशराम चरितरसिक कोऊ कैधौं वा बिदेश घटाघेरिकै न बरसै ५९॥ सवैया॥ निज नैननको बरसा बरसा तरसातन आंशुन धोवती हैं। कहुँ रामचरित्रन रोवतीहैं दिलको दिलही बिच गोवती हैं । हमतो नित पावसकी निशिमें सखि सूनी सेज टकटोवती हैं । धनिवै धनि पावसकी रतियां पतिकी छतियां लगि सोवती हैं ६० धनिवै जिन प्रेम सने पियके उरमें रस बीजन बोवती हैं। धनिवै जिन पावसमें पिसिकै मेहदी करकञ्ज मलोवतीहैं । धनिवै जिन सूरति साजिसजैं हम लाज के बोझ को ढोवती हैं । धनिवै धनि सावन की रतियां पतिकी छतियां लगि सोवती हैं ६१ धनिवै जिन पावसकी ऋतुमें नित प्रीतिमें प्रीति सँजोवतीहैं । धनिवै जिन कारी घटा में अटाबिच बिज्जु छटा छबि छोवती हैं । धनिवै जिन रामचरित्र हिये हिलि होसन हर्षित होवती हैं । धनिवै धनि पावस की रतियां पतिकी छतियां लगि सोवती हैं ६२ ॥ कवित्त ॥ पौन झकझोर घनघोर घनेघटा छटा अटा बिच बिरह के तापतन तापिनी । कहूँ कलना परै कामिनी काकरै दरैदुख दापते दामिनी दा-

पिनी। दादुरौ झींगुरौ मोर सब शोरते रामचरित
बधे बोलि पिक पापिनी। भूल भूषणभयो चुरी चुर-
इल भई राति रक्सिनि भई सेज भइ साँपिनी ६३ ॥
सवैया॥ अब सावन में इतनी गरमी भरमी मतिभोग न
भावतहै। ऋतुमें अनरीति भई सजनी रजनो दिन ज्यों
उवि आवतहै। कवि रामचरित्र कहै किमि कै सुख
सोइये तापन तावतहै। बरसातमें बारि भरे बदरा ब-
रसावत ना तरसावत है ६४ ॥ कवित्त ॥ लागे भरि जोर
मोर कुहुँकन कुंजनमें पपिहा पिया को नाम लैलै कै
धुकारैरी। कहैं नृप रामपरताप कारी कैलियाहू कूक
देती हूकै अरु झिल्ली झनकारैरी। दादुर रटनि सुनि
हियरा फटन लाग्यो जुगनू चमकि सुधि सकल बि-
सारैरी। हाय प्राणप्यारे बिनु घेरि घन आये चहुं
बिरह बिथामें मार मार मारडारैरी ६५ उमड़ि घुमड़ि
घन बरषन लागे चहूं दशाहूं दिशा में लागी दमकन
दामिनी। पौनको झकोर अङ्ग अङ्गको मरोरदेत सा-
वनकी कारी अति भारी लगै यामिनी। रामपरताप
ऐसी समै जाको प्यारो ढिग वाको अति आनँद वो
धन्य धन्य भामिनी। मेरे प्राणप्यारे तो बिदेश में
बसतहायपरी सूनीसेज तलफति ह्यांमें कामिनी ६६ ॥
सवैया ॥ प्यारे औ प्यारी अटा पर बैठिकै देखत दोऊ
घटाकी छटारी। बारहिं बार गराजत बादर दामिनियां
करती ज्यों पटारी। बोलै प्रिया हँसि पीतम सों यह
कारी घटा उनईहै अटारी। रामप्रताप संयोगी सुखी

पै बियोगिनिको भई बूंद कटासी ६७ घेरी घटाघह राय रही दरकावतुहै बिन प्रीतम छाती । कामिनियां हियरा तरसावत दामिनियांचहुंते दरशाती । रामप्रताप झकोरत पौन भई दुखदाइनि सावन राती । तापै बियोग बढ़ावतहै वह पीकहाँ बोलि पपीहरा घाती ६८ को वहिदेश बसै जहँ प्रीतम घेरि घटान कबौं घहरैहैं । की वहि देशन दामिनि दीपति बूंदन मेह नहीं छहरैहैं । की वहि देशन रामप्रतापजू पौन झकोर चहूं लहरैं हैं । की वहि देशमें पापी पपीहा पिया न कहै जो पिया बहरैहैं ६९ ॥ कबित्त ॥ पीउ पीउ रटत पपीहा ऋतु पावसमें दादुर पुकार सो न बांचीकुल चादरन । कोकिल की बोलन मयूर मेरु नृत्यनसों झोली झनकार सुनि भये जिव कादरन । होतो यह काल आली आल जो दिवाकर जू हाव भाव करतो कलोल अति सादरन । जाइ वह देशको बसतहै हमार साईं रोज २ बिरह बढ़ावैं बैरी बादरन ७० आयो ऋतु पावस सुरेर मेरु बोलै मोर धुरवा धुंधार बुन्द बारिके झरै लगी । भनत दिवाकर सुरेश चाप उगो व्योम दादुर दराजसी अवाज करैं लगी । झाइ झाइ बात घहरात घनघोर शोर चातक किशोर चहुं ओर बगरैं लगी । झिल्ली झनकार बकपांती हहकार सुनि नेकुना सोहात आली अक घहरै लगी ७१ पवन वजीर बीर दादुर सिपाही सब पावस मोसाहब पयोद राखे तम्बू तानि । भनत दिवाकर द्विरद शोर घोर घन चपला निशान साज

धनु इन्द्र किरपानि। बरही सवार बकपांति हहकार पिक चारण पुकार बोले बीररस जुह बानि। बूझि के बिहाल बाल आयो रतिनाथ सैन कादर कियोहै व्रजनाथ बिन सूने जानि ७२ झमकि झमकि झूलि रागकी सिखति रीति छहरि छहरि बुन्द गिरत अकासते। भनत दिवाकर करत मोर शोर बन बिहरे बहूटी बीर मेदिनी हुलासते। चातक चवाई चाई सुरति बढावै चाव चूनरि सुरङ्ग रङ्ग बासी है सुबासते। सावन सिरायो मनभावन न आयो आली कादर करत कारे बादर प्रवासते ७३ पालेंगे शचान पिक कोकिल हिवानहेतु वेनीको लुराइ गाड़दादुर लुकावेंगे। भनत दिवाकर सुरज शीश फूल ज्योति आहर सुखाय जिवभूमि प्रफुलावेंगे। बिरह दवारि ज्वाल पेड़ पातजारि डारें वार बगराइके अधार लजवावेंगे। इंधन उसाल लुक पावन प्रकाश करि प्राविट प्रबल तो को ग्रीषम बनावेंगे ७४ कैधौं वह देशशेश दादुर चवाइ डारो कैधौं शैल शिखर शिखीन बैठि बोलैना। भनत दिवाकर की इन्द्रके न देश वह धारा में न धार जल गान वह टोलैना। झिल्लीगण मूकभई शबद सुनावे नाहिं बिपिन बिहङ्ग सङ्ग करत कलोलै ना। ऐसे समय दुन्द मोहिं बुन्दन उदाय हाय पावस निरानो श्याम आवत अबोलैना ७५ सरिता कलोल करे बनिता हिंडोल बरे चपला चमक चहुं ओर नभ दोड़ौना। लता लपटत तरु संगन चलत मरु मुरवा

रहत हरू नेकु सङ्ग तोडौना । भनत दिवाकर समुझ ग्राह मझो कछ अच्छत प्रतच्छ प्रीति राखत है थोड़ौना । सावन भयावन अँधेरीरैनि भादौं कान्ह रहैगी अकेली भौन राधे सङ्ग छोड़ौना ७६ भादौं की अँधेरी धुरवाकी लस्करो पाकशासन करेरी सराक्षरा छोड़े बानरी । बोलत भयान भोगी बासना तजत योगीपति से विहीन ना सोहात खान पान री । भनत दिवाकर करार दरियाव छोड़ी नावके नवाह बादशाह छोड़े शानरी । पावस प्रबल मेरे पिय को छोड़ाय दीन्हों दोयन बिदेशी करें कैसेके पयानरी ७७ बूढके बढत काम पावस सुखदधाम मेघअभिराम श्यामबक्र व्योम उसके । भनत दिवाकर छिहंगचोचा खोताखाइ करत बहार सुलहार लेत खुसके । देखि हरिआई भूमिगाइन हुलास होत रागको प्रकासवोविकास काम कुसके । कुच सहरात घहरात घन खनखन धनधन आली यह कौन चाली रुसके ७८ ॥ सवैया ॥ जाइके द्वारका बैठिरहे जु लहे अबला ब्रजकी दुखभारी । आवत मेघ नयेउनये जुगुनूदरसे सरसे निशाकारी । कोकिलकूक करें हियहूक उलूक सो बोलत पीक पुकारी । आंशु झरें अँखियासेतिया छतिया करके बके हाय बिहारी ७९ ॥ कबित्त ॥ श्याम सम बादर तड़ित पीत चादर से आदर से बातलगे सोठी घनघोरसे । छाती बनमाल से लसेहैं धनु देवराज मोतिन की पांति बक बंशी टेर मोर से । भनत दिवाकर सु आनन निशाकरसे हीरन

से जुगुनू धमांरन के शोरसे। एरे पापी पावसअमावस की राति अस कस अनुहारि पियतोरे मन चोरसे८०

सवैया ॥ घहरारी घने घनघोर घटा करिशोर उठे बहुमोर अटा। घनश्यामैंमिले तियताहीसमै चलीदामिनीसी फहरै दुपटा। वाकेनैन घनेघने घालैं कटाक्ष भनैं भुवनेश सुकोन छटा। जनुविश्व फते करिबेकेहिते फरकावै मनोभव भूप पटा ८१ ॥ कवित ॥ घहरि घहरि घनघोर चहुंओर छाये छहरि छहरि छबि शोभा सरसारैंरी। पवन झकोर जोर दादुर मयूर शोर चोप भरे चारोंओर झिल्ली झनकारैंरी। येरीमेरी बीरबनै धारत न धीर अबपातकी पपीहा पीव पीवके पुकारैंरी। यन्त्र कानधारै अरुमन्त्रको उचारै जाते ताजिके प्रवास मनमोहन पधारैंरी ८२ ॥ सवैया ॥ बन बागन के प्रतिकुञ्जनमें घनी लोनीलवंग लता लहरैं। बसिकेनभ मण्डलमें भुवनेश भले क्षपा जोन्हहियो घहरैं। बरषैं घन आंशुन व्याजन नीर तरूपै अधीर भये घहरैं। पपिहाऊ पिया रटलायो करैं मन मानुषको नहिं क्यों हहरैं ८३ चमकीसी फिरैं चपला चहुंघाद्युति दन्तन को जबहीं सरसै। सुनिके भुवनेश जुबैनसुधासम कोकिलबोलनिको तरसै। यहमेरेही अंगनके परसादते पावस की सुखमा दरसै। लखिके अलकैं घन आंशुन व्याज बड़ेबड़े बूंदन सों बरसै ८४॥ कबित ॥ गरजै चहूंघा घनघोर मोर शोरकरैं लरजैं लतान वृन्द शोभासरसाईहै। दामिनी दमाकैं जुरि जुगुनू चमाकैं कहूं कौ-

लिया दमाकैं भरीकूकैं सुखदाईहै। मन अनुरागैप्रीति रीति उरजागैं लखि इन्दु भटूरागैं बनबागै छहराईहै। अरज्ञ बिहारीपै हमारीभुवनेआयेतौ मिलनके योगबेश पावस ऋतुआई है ८५ पवन झकोरैं झक झोरैंझोरैं बुन्द बोरैंघने घनघोरैं बोरैं दोरैं चहुंओरैंरी। बिज्जु छटाकोरैं बिनयोरैं जी रसालकोरैं आवत असाढ़भारी ठोरैं ठोरैं खोरैंरी। जोरैंप्रेम मोरैं चित्त धीरज बिथोरैं नाहिं मानत निहोरैं कान ध्दुरये फोरैंरी। तोरैंलाज छोरैं कुलकानि बरजोरैंबीर मोरनकी शोरैं मोरैंमन-हिं मरोरैंरी ८६ ॥ सवैया ॥ घूमिघने घुमरैं घनघोरचहूं चढ़ि नाचतमोर अटारी। त्यौं द्विजदेव.नई उनई दर-शाति कदम्बनिकी छबिन्यारी। चूनरिसी क्षितिमानो बिछोईमि सोहति इन्द्र बधूकी पत्यारी। काहि न भाव ति ऐसी समय ठकुराइनि या हरियारी तिहारी ८७ कवित्त ॥ चूनरी सुरंगसजि सोहो अंग अंगनि उमंगनि अनंग अंगनालौ उमहतिहै। सौंध बैठि झांकतीझरो-खनिते कारीघटा चौहरे अटापै बिज्जुछटासी जगति है। द्विजदेव सुनि सुनि शबद पपीहराके पुनि पुनि आनँद पियूषमें पगतिहै। चावन चुभीसी मन भावन के अंकतिन्हैं सावनकी बूंदै ये सुहावनी लगतिहै ८८ सावनके दिवस सुहावने सलोनेश्याम जीतिरति समर बिराजै श्यामा श्यामसंग। द्विजदेवकीसों तनु उबटि चहूंघा रहो चुंबनको चहल चुचात चूनरीको रंग। पीतपट ताने हरयाने लखैं लपटाने उमहि उमहि घन

श्याम दामिनीको ढंग। रतिरन भीजे पैन मैनमदछीजे अरु रसबस होतऊन तनक पसीजे अंग८९ कारो नभ कारी निशि कारिये डरारी घटा झूकन बहत पौन आनँद को कन्दरी। द्विजदेव सांवरी सलोनी सजी श्यामजूपै कीने अभिसार लखि पावस अनन्दरी। नागरी गुणागरी सुकैसे डरैरैनि उरजाके संग सोहैं ये सहायक अमन्दरी। बाहन मनोरथ उमाहैं संगवारी सखी मैनमद सुभट मशाल मुखचन्दरी ९० घहरिघहरि घन सघन चहूंघा घेरि छहरि छहरि विष बुन्द बरसावैना। द्विजदेवकीसों अब चूक मतिदावि अरे पातकी पपीहातू पियाको धुनि गावैना। फेरि ऐसो औसर न ऐहै तेरेहाथ येरे मटकि मटकि मोर शोर तू मचावैना। हैंतोबिन प्राणदेह चाहत जोई अव कतहि मेरिसि तू अकाश बीचधावैना ९१ घूमिकै चहूंघा धायआवैं जलधरधार तड़ित पताके बांके नभमें पसरिगे। द्विजदेव कालिन्दी समीपनकेनीपलके पातपातयोगिनीजमातनते भरिगे। चातक चकोर मोर दादुर सुभट जोर निजनिज दांव ठांव ठांवन सँभरिगे। बिनयदुराय अबकीजे कहा मायहाय पावस महीप के चहूंघा घेरे परिगे ९२ उमड़ि घुमड़ि घनछांड़त अखण्डधार अतिहीप्रचण्डपौनझूकन बहतुहै। द्विजदेवसंथासी कोलाहल चहूंघा नभ मौलते जलाहलको योग उमहतु है। बुधिबलयाको सोई प्रबल निशाको मेघदेखि ब्रजसनो बैर आपनो गहतुहै। येहो गिरिधारी राखो शरण ति-

हारी अब फेरि यहिबारी ब्रज मंडन चहतुहैं९३ जबते हमारे प्राण प्यारेहैं पधारे उत धीरनहिं धारेजात पीर हियमें जगें। शीतल समीरभयो तीर कालिन्दीकेनीर बीर बल बीर बिनु नीर दृगते डगें। केशरी समानजब विरह परेहै आन योग ज्ञानये गयन्द यूथ तबहीं भगें। बोली कोकिलानकी करैंहैं शूल हूलहमैं ऊधोयेकद-म्बनके फूल गोलीसे लगें ९४ दूबरी भईहै देह कूबरी सनेह सुने ऊबरी नशोकसिन्धुपाय ज्ञान वोहितै। रहीं अकुलाय हाय करैं शिर को नवाय कहैं यदुराय रहे केतेदिनको बितै। गाढ़ये असाढ़देखि बढ़ति बियोग व्यथा दामिनी दमक मोर शोरहैं जितै तितै। आये घनश्याम काहू बामने सुनाई टेरि चौंकि चौंकि उठी चन्दमुखी चहुंघा चितै ९५ सावन सोहावन ह्यां लागत भयावन सों आवन अवधि अब शोचैं गजगामिनी। ऐहैं कबहूं धौं बलबीरह्यां कि नाहिं ऊधो कैसे धीर धरैं वे अधीर ब्रज कामिनी। जहां तहां योगन की ज्योति जगें ज्वाल जैसी यमकी जमाति सी जनाति जाति यामिनी। जारैहै पपीहरा पुकारैं पीउपीउटेरि घेरिमारैं बादर दरेरिमारैं दामिनी ९६ लीने लेतज्ञान कोऊ छीने लेत आनि बानि लूटेलेत कोऊ हठिलाज के समाजको। द्विजदेवकीसें या अँध्यारी अन्धाधुंधि मेंकिलेत कोऊ कान्हसुख सम्पतिके साजको। येरी मेरी तोहिं जऊ मानि मानदोय तऊ समय विचारि कीजै ऐसे ऐसे काजको। तोहिं इतमानके अनादरन

घेरो उत बादरन घेरोजाय जाय ब्रजराजको ९७ बरसत मेहनेह सरसत अंगअंग झरसतदेह जैसे जरतजवासोहै। कहै पदमाकर कलिन्दी कुन्द बनपर मधुपन कीन्हो आय महत मवासो है। ऊधो यह ऊधम जिताय दीजो मोहनको ब्रजसों सुबासो भयो अगिन अवासोहै। पातकी पपीहा जलपानको न प्यासो कहा व्यथित वियोगिनके प्राणनको प्यासोहै ९८ सोहत सुभग बैल बाहन बिमल बायु बिशद बकालीशेशहार लपटायोहै। सादर सों लाय बर बादर बिभूति अंग दादुर उमंग धुनि डमरू बजायोहै। कारीघटा गजछाल धारा जटाहै बिशाल दामिनी छटा त्रिशूल सुन्दर सुहायोहै। कारिहै कलेशमोद देहैरी भटू बिशेश धरिके महेशवेश सावन लखायो है ९९ केकिनके नाचगान कुहूंकूक कोकिलकी रटनि पपीहराकी नामधुनि ठानीहै। बूंदनके पात अलि लोचन श्रवत जात जात रगाजात पुलकावलि निशानीहै। मालहैं बिशालबक पांतिनकी दीनद्याल बारिबाह नये वृन्दबन्दनाबखानीहै। झलाझलझल चपलाकी द्युतिध्यानभई पावस न होय भक्तिकला प्रकटानीहै ३०० घनकी घनक घन घटा घनकत आली दामिनि दमकदेत दीपक प्रकास है। बूंदन के फूल जाल धनुलै बिशाल माल आये झुकि मेघसे प्रणामको हुलासहै। मोरनके शोरचहुंओर बिनय दीनद्याल पवन झकोर चोर करैं आस पासहै। पूजन करत प्रीतिरीति प्रकटाय यह पावस

न होय परमेश्वर को दासहै १ श्याम छबि धरे फिरैं धुरवा धरागा छवैरी इन्द्र धनु पीतपट चटक दिखायो है। दामिनि दमक द्युतिदेत देत वोर सोई कुण्डल अमोल लोल गति चमकायोहै। विशद बलाकनकी पांति बनमाल अलि मन्द मन्द मेघ बांसुरीलो स्वर गायोहै। आवनअवधि रही प्यारे मनभावनकी सावन सुहावन सों साजसजि आयोहै २ पावसमें जागि अनुरागिरी सरोज नैनरैन दिनदेत उपदेशको मनोजमुनि। नन्दके किशोर बिन कैसेरहै जीव छिन पीउ पीउहोति पपिहाकी चहूंओर धुनि। अंग थहरानलगे लता लहरान लखि सखिनहिं धीर पीतपट फहरानगुनि। घटाघहरान छिनछटा छहरानलगी हियो हहरानलगो झरि झहरान सुनि ३ आलीप्राशा गाहक बकाली ये बलाहक मैं दाहकसी जगैंपीर इन्द्रगोप गनते। धोरधरैं वोर किमि पेखि सुनासीर चाप उठत समीरलैकलाप तपतनते। ठौर ठौर मोरनकी कोर चहुं ओरचितै हिये बरजोर ह्वै मरोर छिन छनते। दामिनी दमक देखि उठो बरि कुञ्जबाम लखि घनश्यामझरि लगीरीदृगन ते ४ पावसन प्यारी चढी सैनसाजि मैनभारी कोकिलानको बनौलधोल धुजा बकमाल। बंदीजन मोर गन बूंदजोर बानघन दादुर निशान देत दीहदीहनदीताल। प्यारे के निरादर ते कादर करनिहारे कारे कारे धूम धारे बादर हिरद जाल। दामिनि दमक पर बालकी चमक शाल करति बिहालहमें बाल बिना नन्दलाल ५

झूमत झुकत झूमि झूमिघूमि घूमि चले भूमिसों भि-
रत मनो बलके उमङ्गये । बारबार गरज सुनावैं बरजे
न जाहिँ नहींहैं उदारधार मदके तरङ्गये । दन्त बक-
पांतितें डरावैं बिन कन्तभारे अंकुश समीरहू न मानैं
कारे रङ्गये । करिये सहाय आय या छिनमें श्यामघन
होहिँ न सघन घन मदन मतङ्गये ६ सांझहू सकारे
झनकारे होत नदी नारे पावस के मांझ झांझ झि-
ल्लिन तजत ये । दामिनि मशाल को दिखावैं ताल
दादुर दै मोर चहुंओर नाच नाटको सजतये । धुरवा
मृदङ्गनकी धीरधुधुकार ठान रातेंनैन मातकलगानको
भजतये । शोकको जनम ब्रजओकमें भयोहै ऊधो सां-
वरे बिरहते बधावरे बजतये ७ सावन सुहावन बि-
लोयि नभ धनु लेखि यादहोति झटपट पीत अभिराम
की । तकिमृगपांती बिलपाती अकुलाती मतिआवति
सुरति वह मौलसिरी दाम की । मोर चहुंओर देखि
मुकुट सुरतिहोति चपलाचमक देखि कुण्डल ललाम
की । ऊधो ब्रजबाम कैसेधीरधरैं सूनेधाम लखि घन-
श्याम सुधिआवैं घनश्यामकी ८ सांचीकहै रावरेसों
भांवरे लगतमाल आवै जेहिकाल सुधि सांवरे सुजान
की । फूलभार भरी डार जैसे यमजार ऊधो कालिंदी
कछार सजै धार ज्यों कृपानकी । चपला चमक लगैं
लूकहू अचूकहिये कोकिल कुहूक बरजोर कोरबान
की । कूक मोरवानकी करेजा टूकटूक करैं लागतिहै
हूक सुनि धुनिधुरवानकी ९ पावसमें नीरदैन छांड़ैछिन

दामिनिहूं कामिनी रसिक मनमोहन को क्यों तजैं। अचला पुरानी पुलकावलीको आनो उर धायरजवती सरि सिन्धु सङ्गको तजैं। नीरको नपुंसक कहतकवि धीर सबै होयके अधीर तेऊ नारी नारी को भजैं। कुसुमित लतालखो लपटी तमालनसों लालनसों कहो ऊधो क्यों न अजहूं लजैं १० कल न परै हिये कन्हैया की सुगैयालखे चलनसमैया में ललनकह्यो आवनो। औधि आसत्रास रही प्यास अधरामृतको आयो यह सावनो न आयो मनभावनो। पीरे वा दुकूल की सुरति आये शूलउठै कूल कालिन्दीको हूललागत डरावनो। पावस रसमदेखि दहत असम बाण ऊधो क्यों खसम कह्यो भसम चढ़ावनो ११ गये कहि आवन न आये यहि सावन में ऊधो मनभावन भुलाय रहेहैं तहीं। ह्वैरहीं बिहाल बाल ब्रजकी गोपाल बिनारैनि दिनानैनते अपारधार ह्वैबही। वैठि जनपुंज ठाम यमुना निकुंजधाम छांड़ि श्यामपाहि ह्यां सुहात नाहिं है कहीं। गरजैहैं घनघोर लरजै हैं बनमोर नन्द के किशोर सुनी अरजें अजौं नहीं १२ ऐहैं कबहूं धौं हरि कहो तुम सूधो ऊधो ब्रजकी बधूटी. जूटी बूझति हैं बेरिबेरि। देहको परस मृदु सरससनेह वह होयगो दरस घनश्याम को कि नाहिंफेरि। आयो यहसावन न आये मनभावनक्यों लगोहै डरावन मनोज जनुफौज घेरि। दूमैं द्रुमडार छोर झूमैं पिक बरजोर घूमैं घन घोर मोर जूमैं चहुंओर टेरि १३ जादिनते प्राण रख-

वारेने पधारे ऊधो तबते हमारे उर भारे खेद दैसबै। कोकिल कुहूक हूक लगै विज्जुकला लूक टूक टूक करैं हियो मेघ गरजैं जबै॥ घेरे दुख मैनमति धीरज सकैं न धरिआवत न चैन दिन रैनि मन में अबै। पैहैं सुख नैन ससलखे सुखमाके ऐन आये सुख दैन यह बैन सुनिहैं। कबै १४ होयरही हरी हरी ब्रजकी सकल भूमि फूलनके भारझूमि रहीं द्रुमडारी हैं। लहरैं कलिन्दनन्दनीकी नीकी लसे नभ उमड़ि घुमड़ि रहीं घटा घुरवारी हैं। प्यारी मनमोहन जू झूलत हिंडोरे जहां सुरभि समीर धीर चलै सुखकारी हैं॥ प्रेम बश भीजत फिरत फेरि बरषामें बनमें बिहारकरैं राधिका बिहारीहैं १५ यौवन प्रवेश में बिदेश मदसूदनजी निपट अँध्यारी कारी सावनकी यामिनी। यकटक रटत पपीहा पिक नीलकंठ हियो चमकत दमकत ज्यों दामिनी। सूनो सेज मन्दिरमें सुंदरी बिसूरै बैठि प्रीतम सुजान बिन कैसे जिये भामिनी। नैनभरि ढरै मुखहरे हरेकरै हाय उझरि उझरि परै कामभरी कामिनी१६॥ सवैया॥ घनघोर घटा चहुं ओर चली चिनगी जुगनू चमकावनो है। मुरवानकी कूक अचूकहिये सहि हूक महा पछितावनोहै॥ मन माहिं सदा सुदम्पतिके बिरही जन ताप तपावनोहै। अलि सावनमें मनभावनते रहि दूरि महा पछितावनो है १७ चाह चढ़ी चितमें हितको उत कौनहुके रसमें अनुरागे। लेत नहीं सुधि हेत महादुख ये सुरवा मिलि आय अभागे॥ कौलौं

रहौं धरि धीर कृपानिधि बोल उराहनके कहलागे।
देखीलगी गरनूसन के पिय दूसन ह्वै परदेश में पागे
१८॥ कवित्त ॥ आयो ऋतु पावस प्रताप घनघोरभारीसघन
हरीरी बनमराडन बढ़ायेरी। कोकिल कपोत शुक
चातक चकोर मोर ठौर ठौर कुंजनमें पक्षी सब छाये
री।यमुना के कूल औ कदम्बनकी डारनपै चारोंओर
घोर शोर मोरन मचायेरी। येरीमेरी बीर अबकैसेकै
मैं धीरधरौं आये घनश्याम घनश्याम नहिंआयेरी१९
श्वेत श्वेत बकके निशान फहरान लागे ईंचि ईंचि
चपला कृपान चमकायेरी। घहर भुशुराडीकीअवाज
सी करनलागे बुन्दनके झरनन झीने झरिलायेरी।
भनत प्रताप रतिनायक नरेशजूने धीरगढ़ तोरिबे को
पावस पठायेरी। येरी मेरीबीर अब कैसेकै मैं धीर
धरौंआये घनश्याम घनश्याम नहिं आयेरी२०॥सवैया॥
आसव में चपला चष चूंधित चौंकि अचौंकि भुजान
भरैंगे। साहसकै रसकै मुसकै सिसकै बशहीतल ताप
हरैंगे। पीपरदेश करै हियपीर अधीर भये हम हाय
जरैंगे। पावसमें पियप्यारी प्रमोदित कोऊ बिलासी
बिलासकरैंगे २१ सोइगई पैंकिरातमें आजु तहीं मन-
मोहन आइ गयोरी। तौलौं घनेरी घटा लखिकै इन
मोरन शोर मचाइदयोरी। ऐसो बियोग दयो बिधना
सखि सापनेहू न सँयोग भयोरी। कासों कहा कहिये
नँदराम भयोउर सौगुनो शोच नयोरी२२॥कवित्त॥ श्याम
घनघटाछाय आयआय घटापर दामिनिछटा दिखाय

कटासी करावैं लाग। शोरके चकोर मोर मोर मन मोरैलगे दादुर गोहार करि सार गोहरावैं लाग। कोयल कुहूक कूक टूक टूक कीन्ह्यो हिय जुगुनू दियासी बारि अंग अंगतावै लाग। बन्दिबिन भावन प्रपीहा यहि सावनमें पियापिया टेरिटेरि जिया को जरावै लाग २३॥

शरद ऋतुके कबित्त व सवैया॥

कबित्त॥ अम्बर अमल होत चन्दकी बढ़त ज्योत खंजनकी गोतमानो परी आइनाकते। भनतदिवाकर तरंग गंग स्वच्छभयो उग्योहै अगस्त जल सूखे जनु साकते। जहँतहँ पथिक चलन लागे चारोंओर शरद नरेश कियो तिय पिय छाकते। दिनतो बितत संग सखिन हितनसत रातिनाकटत बिनुश्यामचन्दराकते१ दीपदान देवन दिवारीको चढ़ाते सब जुआ खेलि दम्पति हियेमें हरखाती है। वेश्या गण रसिक रिझावैं के शिंगार देहसुख मुसुकाति हरेराग बरखाती है। भनत दिवाकर अटापै घाट बाट गेह रोशनी तमाम चहुंकोन दरशातीहै। प्यारो ब्रजराज बिनपापीद्विजराज सखी रातिये दिवारीकी अराति समझातीहै २ मन्द मुसुकानि चन्द ज्योतिमें उदोति होति कुंदमेंदिखावैं द्युति दशन रसालकी। खंजन लखावैं कान्ह नैन मन रंजनसे पानिलौं सुहावैं कलाकंजन बिशालकी। भौंरनकी गुंज पुंज मंजुल मंजीरनसी हंसनि चलावैं गतिश्यामके सुचालकी। आयोरी शरद काल बरब

बखावनको जरद करैहै हमैं शोभावरि लालकी ३ ताराकरा भयगा सघन अंग अंगन में वसन मयूषनसों रही लोनी लसिकै। दन्तकुमुदावली चमक चारुचोरै चित्त जोरै मुख चन्दको सुमन्द मन्द हँसिकै। मालती सुगन्ध सनी मालती हियेमें माल रहे नंदलाल कहूं याके ख्याल फँसिकै। शरद विभावरी न होय छवि बावरी तु दावरी लियेहै यह सौति श्याम बसिकै ४ चित्तन की छावनी बिराजै दिनप्यादे पुनि नायक निशाहू भोर थानेदार पालाहै। ओसहै सुबेदार जल है इन्स्पेक्टर कपतान शीत बातको कसालाहै। जनरल आदि सब बादर औ बंदी ठानो शीतताके अस्त्र घोर अस्त्रहू सुचाला है। धनकेरै पंचदश मकरपचीस अंश तेईचीफ शालग्राम शीत को रसाला है ५ गुणा के निधान दोऊ रूपके निधान दोऊ परम सुजान दोऊ मिलि बतरावहीं। प्रीतिरीति देखे दोऊ रहैं अनमेखे दोऊ मुदित अलेखे दोऊ रस बरसावहीं। राधा मनमोहन अनंग की तरंगनि सों शिशिर की रजनीमें सुख सरसावहीं। आगनि परसैं पुलकितगात वरैं प्रेममें बिवशपर दोऊ लपटावहीं ६ ॥ सवैया ॥ बारुनी ओरकी वायुबहै यह शीतकी ईतिहै बीसबिशा मैं। रातिबड़ी युगसी न सिरातिरह्यो हिमपूरिदिशा बिदिशामैं। गोकुल डारिहै मैन मरोरि कहोंव कहा कहे मान किशामैं। कौनको छांह छिपोगी तिया छतिया तजि नाहकी माहनिशा मैं ७ ॥ कवित्त ॥ दुसह

दुशाला होत जनबिन बालाहोत शोचअति आलाहोत मैन मन जागेते। द्विज बलदेव तूल मूलकौ नसेव सब पावकको भेव जानि लीन्हो जग आगेते। प्रचुर पदारथ प्रसिद्ध पुहमीपै प्रिय परम प्रसन्न मनतासों प्रेम पागेते। बीतिजात बैसन मनोजमन जीति जात शीत जात उन्नत उरोज उर लागेते ८ शीतल समीर आय उरन दुशाल होत जगत बिहाल होत बचतन भागेते। हाथपायँ कम्पेजायँ बसन न धरेरहैं रैनि कम्पजाय ना रजाई तनत्यागेते। राय कबि दम्पति विनोद चहूंकोद करैं शिशिरमें होत घर बाहर अभागेते। अगिनिके आगेते न जागेते न बागेते सुशीत जात उन्नत उरोज उर लागेते ९ आड़ेना रहत रोम ठाढ़ेही सदारहत पच्छू को पवन फेरि पालासों कटतहै। कम्पत करेज सेज सोइये सुखत अरु गब्बर गरीबनकी गरुता घटत है। ठाकुर कहत फेरि पानीते परस होत होततन पीरनेम नाहीं निपटत है। ओढ़िये दुशाला तरे तोसक बिशाला बिना लागे अंगबाला शीतकालाना कटत है १० रतन जटितत्यों घटित घरचारोंओर दरन दिवारन किवारन मुदायेहैं। परदा पसमके असमके पड़ेहैं गोल गेंदवा गलीचन गिलम गुदवायेहैं। मंजुकबि आतशा अगीठी धूप धूम धूम धूम झूम झूम शुचि सौरभ सुहायेहैं। केलिकल क्रीड़ा ब्रीड़ाहसनबसनद्युतिदम्पति दिपति दिब्य शीत शिशिराये हैं ११ कञ्चन के पलँग बिछाये पोश महलमें चहल हुपेदी सनी सौरभ रशा-

लामें । ओढेऊ न अम्बर सकलनख शिख तऊ नेकहूं न मानै मन रहत कशालामें। कबिबंशरूप साजे दीपगरा माला स्वच्छ अधिक उतंग त्यों अनंग चित शालामें। मर्दति मशालाहैं बिशालाजे दुशाला आला पालासम लागैं बाला बिन शीतकालामें १२ नारी बिन होतनर नारीबिन होतनर राति सियराति उरलायेपयोधरमें। बेणी कबि शीतल समीर को सनाका सुनिसोवैं सब सांझते कपाट दै शहरमें। पक्षीपक्ष जोरेरहैं फूल फल थोरेरहैं पालाके प्रकास आसपास धरा धरमें। बसन लपेटे रहैं तऊ जानु फेटेरहैं शीत के समेटेलाग लेटेरहैं घरमें १३ चित्रकविधामैं रूपराशि बसुधा में अनुराग बलतामैं सो सुधीमैं हेरिखायोहै। देतमनकामैं बलदेव कहां कामैं बालकामैंकी कटाक्षकरि कामैंकोलजायो है। सेवत सुवामैं तेतमामैंहैं समामैं जानि हरष हमामैं भोरसामैंना जनायोहै। शिशिर अरामैं रंस रसरसरामैं कसिजामैं गजजामैं हितजामैं चितलायो है १४ असन बें आसनमें असल अवासनमें सांसनमें कछुक हुतासन में आइगो। फूलन में तूलनमें मंजु मखतूलन में दोहरे दुकूलनमें कूलन अघाइगो। सेजनमें तीखे सुरतेजन उताजन में सदन मजेजन करेजन कँपाइगो। नीरन में त्योंहीं जगमोहनसमीरनमेंजहांजहांदेखौतहां शिशिर समाइगो १५ सोनन के चौके चुने चमकें नगीनन के झीने पलमाने केसी गहब गहीलेहैं। तूलनके तागेधागे मंजु मखतूलन के रेशम दुकूलन के परदे रँगीले हैं।

नीचे नये खासे जगमोहन गलीचेयोंसी सेजके नगीच ही चिराग चटकीलेहैं। लपटे सुआसन में छपटे दुशा-लनमें सोये शीत कालनमें छपके छबीले हैं १६ परे कोऊ पकाह पिछौना करतेई रह्यो प्यारी कहूं पुहुमी पै पालापरि जावैना। मीरन कपारसी परेखो इन नैनन सों सारी दुनियांकी सियराई सरसावैना। देखो जग मोहनजू बावरी बियोगिनिको काहू अब कलितकरे-जो कपि आवैना। हाय नवबाला बिन निपटि निरा-ला परदेशमें पराला शीतकाला कहूं आवैना १७ बेर बेर ढांके बड़ेडर डरझांके तऊ और कड़कड़दांतेबाज जुरि जुरिजात। नेकहोत न्यारेतोपै थरथर कांपध्यारे ओढ़ि ओढ़ि शालभालहू ते लुरि लुरिजात। शोभन भनत भाग भागआग आगेजात लखि छारभार पुनि पुनि मुरि मुरिजात। शिशिरके शीतमें अनीत शीत मान भीत सेजके पुनीत दोऊ २ दुरि दुरिजात १८॥ सवैया॥ पूसको मास सुबीति गयो हिय जोशभरीबिर-हागिन पैठी। दोषकहो केहिको कहिये अब तोसन होतहै जाउँमैं कैठी। यादि ह्वै बोल मसोसत है जिय होश परीरहै तास अँगेठी। नेकतजे अफसोस कियो जिहि हाय सुतीनसे कोशपै बैठी १९॥ कबित्त॥ पावस निकास ताते पायो अवकास भयो जोन्हको प्रकास शोभा शिशिरमनीय को। बिमल प्रकाश भयेवारिज बिकाश सेनापति फूले काश हित हंसनके हीयको। छितबगारद मानो रँगेहैं हरद शालि सोहत जरद को

मिलावै हरिपीयको । मत्तहैं द्विरद मिल्यो खंजनदरद ऋतु आईहै शरद सुखदाई सब जीयको २० कातिक की राति थोरी थोरी सियराति सेनापतिको सोहाति सुखी जीवनके गनहैं । फूलेहैं कुमुद फूली मालतीसघन बन फूलिरहे तारे मानो मोती अनगनहैं ।उदित बिमल चन्द चांदनी छिटिकिरही रामकोसो यश अध उरध गगनहै । तिमिर हरन भयोसेत है बरनसब मानहुंजगत छीर सागर मगनहै २१ बिबिध बरन सुर चापते न देखियत मानो मणि भूषण उतार धरे भेशहैं । उन्नत पयोधरबरसि रस गिरिरहे नीके न लगत फीकेशोभा के नलेशहैं ।सेनापति आयेते शरद ऋतु फूलिरहे आस पास कासखेत खेत चहुंदेशहैं । योबन हरन कुंभयोनि के उदैते भई बरषा बिरध ताके पुवेत मानो केशहैं २२ राजीजिय करति रसीलिनकी राजीतैसी राजी मुकु-लित मालती की दरशातिया । कुञ्ज कुञ्ज मन्दिरन अलि पुञ्ज गुञ्जरत मंजु मकरन्द मन्दगातसी विभाति-या । कहत किशोर कोशवद्ध कमनीय महा रमनीय रमन बिनाहू बनजातिया । शरद समस्त शोभाशशि मयव्योमकाम बससर्यावश्वरंग रसमय रातिया २३ आसपास पुहुमि प्रकास के अगार सोहैं बनन अगार दीठि ह्वै रही निवरते । पारावार पारद अपार दशों दिशि बूड़ी चण्ड ब्रह्मण्ड उतरात बिधिवरते । शारद जुन्हाई जनुधाई धार सहस सुधाई शोभा सिंधुनभ शुभ्र गिरिवरते । उमड्योपरत ज्योतिमण्डल अखण्डसुधा

मण्डल मही में बिधु मण्डल बिचरते २४ आई ऋतु-शारद गगन बिमलाई छाई खंजन की राजी कुञ्ज कुंजन बसैलगी। हरित हरित पथ पथिक सिधारे कथ अकथ मुरारी ओप जग बिलसै लगी। सुमन शरासन के सुमन शरानते सुकूटिकै सुमन शर आलीही गर्से लगी। तालन कमलफूले कमल बितूलै अलि अलि पर पीतमा परागकी लसैलगी २५ चाँदनी महलबैठी चाँदनीके कौतुकको चाँदनीसी फूली राधे चाँदनी महालरैं। चन्दकी कलासी देवतासी देवरासी सङ्ग फूलसे दुकूलगरे फूलनकी मालरैं। छूटत फुहारे तारे झलकैं अमलजल चमकैं चँदोवा मणि माणिक बिशालरैं। बीच जरतारन की हीरन के हारनकी जगमगी ज्योतिनकी मोतिन की झालरैं २६ मोती मंजु महल बितानतने मोतीमयी मोतिन की झालरैं मनोजहिं गनै नहीं। सेवक भनत वैसे फरस फतूस आज सेज सुखमाकी छबि उरमों छनै नहीं। चाँदनी चस्कत चमक चुनीन तैसी अङ्ग चारु तासों दोऊ मोरत मनै नहीं। शरदको साज ब्रजराज राधिकाको आज चाहत बनैपै त्यों सराहत बनै नहीं २७ छिति पर देखो महा सौरभ सरस शुभ सौरभ सरस पर सुरस शरदकी। रसपर कहै श्याम सुन्दर झलककछबि छबिपर मारुत जो जलद शरदकी। मारुतपै राजत ममग सुगगन पर चाँदनी बिराजत त्यों शारद शरदकी। चांदनीपै चन्दकी सुमाहिका दुचंदफबी चन्दकी सुमाहिकी

पै साहिबी शरदकी २८ गगन गयन्दपर चढ़योकरि डङ्का डङ्का बङ्का पिकनाद आगे होत मन भायो है । भनत कवीन्द्र तारे सुभट अमीर जोर पैदर चकोरमोर शोर सरसायो है । तोरतम अग्रा खग्ग लैकर उदग्र बर मदन हरौल मानगढ़पर धायोहै । चमू चन्द्रकान के पसारे अलबेश नव तेश आज नवतम नरेश बनिआयो है २९ कासन के कुसुम बिकासन लगे हैं अङ्क कञ्ज कञ्ज आसन पै चारुता चढ़ैलगी । सेवक भनत कवितारन कतारन ज्यों तारन पियाकी पुरहारन मढ़ैलगी ॥ अवनिमें अम्बुमें अकाशनिमें आछी भांति ठौरठौर दीपनकी दीपति कढ़ैलगी । सेलीको सकेलि के चमेलीके चलत चाह बेलीसम बनिता नवेली की बढ़ैलगी ३० नवोखण्ड मण्डित अखण्डल उदोत भयो राका चन्द्र मण्डल दिशान दशादरशात । विमल बिशाल भये शीतल सरित सर सकल कलित ते बिलोकियत अवदात । मोतीराम मंजुल मृदुल मालतीन मिलि मलयजमलय समीर सीरे सरसात । दरद करतये भँवर भीर कुञ्जकुञ्ज बेदरद आलीरी सतावत शरदरात ३१ हरत किशोर जो चकोरन को तापकिल कुमुद कलाप मुकलीकर सुछन्द भो । मानिनीनहूं के हिय दरप दलितकर कन्दरप कन्दलित करि अनंदभो । मुदित कमल अवलीकर तिमिरकवलीकर दिशान धवलीकर अमन्दभो । आनँद अमित करलोक प्रमुदितकर कोक अमुदितकर समुदित चन्द

भो ३२ बरण्यो कबिन कलाधर को कलङ्क तैसो को सके बरणि तिनहूं की मतिछीनीहै। सेनापति बरणी अपूरबयुगुति ताहि कोबिद बिचारो कौनभाँति बुधि दीनीहै। मेरे जान जेतिक सों शोभा होत जानपरी तेतिकै कलानिरजनीकी छबिकीनीहै। बढ़ती के राखे रैनिहू तें दिनहूवैहै याते आगरी मयंकते कलानिकारि लीनीहै ३३ पूरबहरित बनिता को मुखपत्र तामें रचना रुचिरबर मृगमदरङ्गकी। कैधौंनभसरवर फूल्योहै कमल तामें मेचक प्रभाहै आली अवली उमंगकी। औरो कबि कोबिद न उपमा अनेक कही वदन बखाने एक इहि विधि अंगकी। बिरही निरखियाहि नाखत निसास याते दागिल दिखात मानो आरसी अनंगकी ३४ सुन्दर सुधार्यो सौध सुधासों सुधार सन्यो सौरभ सरस सुरभित आसपाससो। बिमल बिछौने बिछेरजत जरीके चारु जगमग होत भोलानाथ के निवाससो। राकापति छायो तैसो मध्यमें सुमध्यबाल बैठीपरयङ्क पै बिराजत सुहाससो। अम्बर में चन्दकी अवनि पर चन्दचहूं चाहत चकोर शोर पार्योहै प्रकाससो ३५ अतिही अमंद बंधु चंद्रिका सुधाकरकी पुण्डरीकपथिकप्रिया को प्रतिकूल है। कहत किशोर निशि नारि केहिये की मणि दरशावै कुंवर किशोरी दिनदूलहै। दरद हरनबर परबको इन्दुस्वच्छ शारद सुइन्दिरा को मुख सुखमूलहै। तारकान कलित मझार चारु द्युति फूल्यो अंतरिक्ष कलप तरोवरसो फूलहै ३६ मोरवीके

देखिये कुमोदिनी केहीके दोइ दीपति दीपति दीपद्युति उफ्तानकी ॥ कोकलोकलोकनको थोकन विनोदबाढो शोभा सरसाई स्वच्छ सरित तटानकी। रंगभरी राजत नवीन रसराकारम्य शीतल सुगन्ध गन्धरजनी उटान की। निंदित चकोरैं छबिछाकि मुखलूटैलेत छूटैचन्द्र मण्डलते छहर छटानकी ३७ कढ़त निशाकर दिवाकरसो दीठिपर्‌यो अन्धकार सोतो एकपलमें पलायो है। भोरभयो जानिकै बिहंगनमें शोरमच्यो अवनीअकाशमें प्रकाश सरसायोहै। परीचल चालचाल चमू चतुरङ्गिनीमें नागर तपत तेजअश्वपर आयो है। चाँदनी न होय यह मानिनी के जीतिबेको मैन महारथी ब्रह्मअस्त्रहि चलायो है ३८ घामसम चाँदनी बेघेर्‌यो ब्रजमण्डल है तातो चण्डकरशी मयूखन मचाय ले। आज अबलानिमारि औरहू कलंकलैकै मनकेमनोरथ नीकेकै रचायले। धीर बलबीरके बियोगी नैननीर भरे प्रेमरस प्यासे प्रेमतिनको जचायले। एरेमन्द चंद सुनि आवै ब्रजचन्द जौलैं तौलैंतन गोपिनकोबिरह तचायले ३९ काम को बिकासन सो कासन करैगो नाहिं याते हियो शासनसों मेरो अतिभ्वैरह्यो। धान प्रान पाके हेरिहेरि धीरहाके धरै बाढ़े बिरहाके हाय नैननीर च्वैरह्यो। कहैहनुमान फूलेकञ्जनपै भौंरनको वृन्दसो बिलोकि बैसमानो यमज्वैरह्यो। झाकरिकहै नयों क्षपाकरिकै लालनसों शरद निशाकर दिवाकर सो ह्वैरह्यो ४० याहीते निपट निरधारि तोहिं नीर

सकै छांड्यो सब सुरन सुधारसको चाखि चाखि। देव-मथिवेही काज बेर बिरहीजन सों बांध्यो ऐसीबातन कलङ्की भयो साखि साखि। शरदकी ऋतुमें उचाट चित ब्रजराज राधेको बिरह व्याप्यो उठतयों भाखि भाखि। कियो कहा चाहतहै रैनचारी चितचोर अरे चन्द चाँदनी कीचटकहि राखि राखि ४१ ग्रीषमकी घामहै नघाम घनश्याम याते छबैगई सुबान श्वेतह्वै गई जरदकी। बीचन दरीचनके आभाहै मरीचन की कामने निकारी कोर तीषन करदकी। फैलफैलगौलन नवीन बिष फैल भरी देषत दुखीन द्युति पारद बरद की। शरद करीहैं दिन दरद भरीहैं सखी शरद परी हैं। लखि चाँदनी शरदकी ४२ बैरही विशद क्षीरनद ते शरद शुभ्र शोभितसुसद फैली फेनके फरदकी। उन-मदमदमें सुगंधकी बिहदसैना धाई चहुंहदते छपदरुज-रदकी। तैसोही बिरह बदमारत दैगदबद चूमतकरेजो कोर कामके करदकी। चौरकीनेरदरी दरददै करीहैं बेपरद बेदरद दैयाचाँदनी शरदकी ४३ फूले आसपास कास बिमल बिकास बास रहीना निशानी कहूं मही में गरदकी। राजत कमलदल ऊपर मधुपमैन छापसी दिखाई छबि बिरह फरद की। श्रीपति रसिकलाल आली बनमाली बिन कछूना उपाय मेरे जियके दरद की। हरद समान तनभयोहै जरद अब करद सीला-गतिहै चाँदनी शरदकी ४४ चन्दनिशि ललना वदन लखि आईकैधौं पारदकी खानि फैलिआई आसमान

है। कैधौं सुखके प्रबोध सुखित सकलसुर लोकन को कलहा सभासें भासमान है । मेरे जान मदन महीप सब जीति क्षिति ऊरध चढ़ाइके तयारी को समानहै। कैधौं तारागन मुकताहल के झूमकन चाँदनी न होय चारुताई को बितानहै ४५ बादलाके बीजना बनाय बर बादलाके बानिक सहेली ज्यों सुरेशके सदनकी। मोतिनके हार औ हमेल गुलुबन्द बेंदी पहिरि खराऊ खरी कुंजर रदनकी। हीराहीको चूराबाजूबंद औ तरौना बेना महासुखदानी रानी मोहन मदनकी। चाँदनी में चाँदनी पै चाँदनी बिछौना पर चाँदनी सीफैली चारु चांदनी बदनकी ४६ पूरण शरदशशि उदितप्रकाशमान कैसी छबि छाई देखो बिमल जुन्हाई है। अवनिअकाश गिरि कानन औ जलथल व्यापक भई सो जियलागत सोहाईहै। मुकता कपूरचूर पारदरजत आदि उपमाये उज्जवल पै नागर न भाई है। वृन्दावन चन्दचारु सगुन बिलोकिबेको निरगुन ज्योति मानो कुञ्जनमें आईहै ४७ डोलै नभ बीथिन में बोलै धरि मौनव्रत भये सित मूतिलाये रहे तित छजिकै। जीवन हिजनकोदै जीवन मुकुट होय बनेहैं बिमलबाम चपला को तजिकै। दीजैनहिं दोष एक ऐसेअलि ऊधवको श्याम भये बाम अब करो जो गरजिकै। नीरद शरद के दरदलि देशदेश करैंउपदेश येऊ यतीवेष सजिकै ४८ चन्द्रमाप्रकाशनमें चन्द्रमुखी हाशनमें अवनि अकाशनमें काशन में छाईहै। नन्दराम तालन में इन्दी

बनमालन में चंचरीक जालन में अधिक अमाई है।
मेचकाकी डारिनमें मालती कियारिनमें फूलीफुलवा-
रिनमें सोगुणी सोहाईहै।कामकैसी खेतिन में बालुका
समेतिनमें सुरसुतारेतिन में शरद समाईहै ४९ हवैरही
तयारी महारानी रासमण्डलकी मल्लिका व मालती
सो अमित अगारहैं। कहैं नन्दरामगई सरीसेत सारी
साजि गोपकी कुमारी हिये हीरन के हारहैं। षोडश
कलांसों आजु उदित कलाधरहै चांदनी के भारनसों
छोंड़े अभिसार हैं। सेत चांदनी में सेत चांदनी चँदोवा
तनेमानो क्षीरसिन्धु परे पाराके पहार हैं ५० षोडश
हज़ार बाल षोड़श शृंगार साजि षोड़श बरषवैस मु-
दित बिहारहै। बाहुन सों बाहु जोरि मोरिमोरि अंग-
नसों कीन्हों महामण्डल अखण्डल अपारहै। कहै
नन्दराम तैसे तारओ सितारमिलि चूरी खनकार स्वर
पंचम उचारहै। भूतल दिशान बिदिशान आसमानहू
लौं छम छम छाई घुंघुरूकी झनकारहै ५१॥

हेमंत ऋतुके कबित्त व सवैया॥

कबित्त॥ ओक ओक लोक सबकरत कलोलनिशि
कोकन को शोकभो कलानिधि को काफांसो। भजत
दिवाकरलगावत अतरअंग बारतहुताशन डरपके बरा-
फांसो। राजा औ अमीर पशमीनाके बहारलेत मोजरा
बरांगना करावत इजाफांसो। आयोयेहेमंत कन्तलहत
अनन्तसुख सन्त जड़ सेनलेत जगत जुराफांसो १ पल
पल दिनदिन यामिनि घटनलागी भामिनी जगनलागी

यामिनी शकन्तमें । भनतदिवाकर संयोगिनी सुखीनी कोनी दुखिनी वियोगिनी लगीनी हंस हंतमें । थरथर थरथर बाजत कपाटफट सटपट सेजपै मजेज छबिवन्त में । सखी यह पाखमें जो आयो ना हमारोकन्त होंगे प्राण अन्त नहिं पाय कै हेमन्त में २ अगर की धूप मृगमदकोसुगन्धवर बसनविशाल जाल अङ्ग ढांकियतु हैं । कहै पदमाकर सुपौन को न गौन जहां ऐसे भौन उमँगि उमँगि छाकियतुहैं । भोगओ संयोग हित सुरत हिमन्तही में एते सबसुखद सुहाये बाकियतु हैं । तान की तरङ्ग तरुणापन तरणि तेज तेल तूल तरुणा तमूल ताकियतुहैं ३ छाईहै हिमन्त बात तन्त की बतायदेत अन्तको बराय जिय अन्तको न जाइये । द्विजबलदेव कहै कसकहि दूरिकरि कामकी कलोल कान्ह का-मद मचाइये । अतर तमोल तेल तूलन के तुङ्ग साजि तातीसी सोहाती सेज तापै इत आइये । करत हैं आन तजि मानको समान नेक मानिये प्रमान निशि भान उर लाइये ४ छाई शीतलाई मुरझाई कला कुञ्जनको मानो मनरञ्जनकी पाइकै जुदाई है । कापै कहिजाई दिनहूँकी लघुताई जनुरही छलताई लखि प्रीति सकु-चाईहै । रैनि अधिकाई भयो विरह सहाई तासु शीत चहुंघाई विनु मीत भीति धाई है । पीर सरसाई फूले सरसों सरस भाई हेमऋतु आई ना कन्हाई सुधिपाई है ५ तुलसी लसी सुअङ्ग अतिसे उमङ्ग देति जासु मैच बास योगीजन बिलसन्त हैं । शीतल सवाँर उर कामा

दरशाय करि जातन विलोकि शोककोक बिलपन्त हैं। आसु की बिभावरी बिशाल लखो दीनयाल मिवकाय सब हीके सुखद बसन्त हैं। किधौं हैं हिमन्त के सुतन्त शित सन्त सभा किधौं सुखमाल सन्तकमला के कन्त हैं ६ सूर ऐसे शूरको रुकरको दूरकियो पावक रिकलौनाकर दियो है सबनको। बातनकी मारहीते बात को भुलात सुधि कांपत जगत जाकीभय आनमनको। गिरिधर दासरात लागै कालरातकोसी नाहिंसों लगत भाम राखत चरनको। आयो है हिमन्तभूमि कन्तते जकन्त दीह दन्तन पिसावतो दिगन्तके नरनको ७ कंजना सुखाये ये सुखाये रंज मनही के शीतना बढ़ाई .सीत प्रकटी समन्त है। रातना अधिक करी रतिअधिकाई भाई दिनना घटायो कर्म बासना तुरन्त है। गिरिधर दास पौन शीतल असहहैन प्रेम के प्रवाहजग चलन टरन्त है। राधिका के कन्त को भगत मतिमन्द है कि ब्रज शीतवन्तऋतु प्रकट हिमन्त है ८ अतिही अराम देन औनको अराम अभिराम आठौओर ओरयो ऐसा अवलनमें। आसन अनूप आपई शहै अनीशा आपै अधिक अवलोकि है उदासी अम्बजन में। गिरिधर दासको उपमान आवत है ईगुरसी आछी अरुणाई अधरन में। अगधर इंदुमुखी औजसों अमल ऐसे लसै अननबमे अजब अगहनमें ९ चारों ओरमोर बैठिदाव चारों ओरन लौं ज्योंहीं मनमथ राखो हिमन दुहाई में। आवक अरगजाके तिलक बिराजि रहे भाषभरे भागनकी अगपग

ताई में । अलक चमर घनश्याम बाजे नूपुरादि बटत हंसन अवलोकन बधाईमें । थिर चर ऐसो राज देखो देखो सखी आज दुहुनर जाईपाई एकही रजाईमें १० बरसै तुषार बहै शीतल समीरनीरकम्पमानउरक्योंहूं धीरन धरतहै । रातिन सिराति सरसाति व्यथाबिरह की मदन अरातिजोर योबन करतहै । सेनापति श्याम हमधनहैं तिहारीहमैं मिलोबिनमिलेशीतपारनपरतहै। औरकीकहा है सविताहूशीतऋतुजानि शीतकोसतायो धनराशिमें परतहै ११ शीतको प्रबल सेनापति कोपि चढ्योदल निबल अनलगयो सूर सियरायकै । हिमकै समीर तेई बरषैं बिषमतीर रहीहै गरम भौनकोनहीमें जायकै । धूमनैनबहै लोगहोतहैं अचैनतऊ हियसों ल-गायरहैं नेकु सुलगायकै । मानो भीत जानि महाशीत ते पसारि पाणि छतियाकी छाहँ राख्यो पावक छि-पायकै १२ पूसके महीना काम बेदन सही न जाय भोगही के योसनहीं बिरह अधीनकै । भोरही केशीत सोंन पावक छुटतत्योंहीं रातिआई जानिहैं दुखितगन दीनके । दिनकी छोटाई सेनापति बरणी नजाइ रंचक जताई मन आवै परबीन के । दामिनी ज्यों भानु ऐसे जातुहै चमकदेखो फूलै नहीं पावत सरोज सरसीनके १३ आयो सखि पूसो भूलि कन्तसों न रूसो कोलही सों मन मूसो जीउ ज्यों सुख लहतुहै । दिनकी घटाई रजनीकी अघटाई शीतताईहू को सेनापति बरणि कह तुहै । याहीते निदान प्रात बेगि उदै होत नाहिं द्रौपदी

के चीर कैसा रातिको महतुहै। मेरे ज्ञान सूरज पता-
स तपै ताले मांझ शीत को सताया कहलाय कै
रहतुहै १४ सूरैताज्ञ भाजी बात कातिक में जब सुनी
हिमकी हिमाचलते चमू उतरातिहै। आये अगहनकी
नेगाहन दहनहू को तितहू ते चलीकहूं धीर न धरति
है। हिममें परोहै हूलदौरि गहि तज्ञातूल अब निज
मूल सेना पति सुमिरतिहै। पूसमें तिया के उच कुच
कनकाचल में गढवै गरम भई शीत सों लरति है १५
पीय पीय रटत रहत आठहूं पहर रसनाभई रहतज्यों
पपीहा पावसी। घरीघरीदहै मैनचित्त कोन कहूं चैन
रह्योन परत अैनबूडेवैन नावसी। तुलसी कहत पिय
प्यारे के समीप विना भूषणाकी कहा भौन भोजन न
भावसी। पीवबिन पूसमास पैयत न चैन आली बुन्द
ऐसो दिन होत रैनि दरियावसी १६ आवन लगी हैं
अंशु पावक प्रभाकर की छावन लगीहै गति शीत
की दिगन्तमें। रात अधिकानी दिनहानी त्यों प्रत्यक्ष
भई सृष्टि सियरानीहै गरम सलतन्तमें। कहैतोषहरि
सजि मुहे रंग अंगपट चाहत उमंग कंतकामिनिएकं-
तमें। सेवैं आगवन्त मदमादकछकन्त सुख प्रयासा
को अनन्त छबिवन्त या हिमंतमें १७खांसी कोठरीन
में सवांरी सेज सैंधेसनो आसपास अगर कपूर बगरे
रहैं। दरन सुपरदा गलीचन सों झंपी भूमि बरैं दीप
कांचन के अतर भरेरहैं। ऐसे समै कन्त संग युवतीहि
मन्तऋतु पौढ़ि पलका पै दोऊ आनँद भरेरहैं। शीत

श्वास दपहेसे कंपटे दुकूल दुःख लपटे दुशालन सों झपटे परे रहैं १८ छोटे दिन ह्वैगो दुख ओट छूटिबे को भयो मोट सुखलूटि मैं निशाको बड़ी ओरैना । सैंधेतेल तूलनि तमोलनिके रंग भरे पामरी दुकूलनि ओढ़ाय मुखमोरैना । मेवक रसालन मसालनके माचे मोद आगिहूकी सालन विसालनको दौरैना । खाय काम तन्त के अनन्त सरसन्त मोको पायपाय हरष हिमन्तकन्त छोरैना १९ धाई है बरापै सियराई चहूं ओरनते पलटि गईहै पूरी प्रकृति अनन्त की । पानी पौन पुहुमी पराग अङ्गरागन की अंगन अंगार दिशि विदिशि दिगन्त की । कम्पि कम्पि आवत करेजो जगमोहन जो कामिनी छोड़ाये हिये छोड़त न कन्त की । हरषि हजारै कलका उतरु जाके छाके बाढ़त निशाके अंगढाकत हेमन्तकी २० चारो ओर चरचा चलीहै चपरालिन की दीरघदरेरो द्वारद्वार दुलहिन के । लागे लोगलाले पीले बसन रँगीले लेन देन त्यों-किवार कम्पि कोठेपै रहन के । त्योहीं जगमोहन त-लाश अबला को होन तरुणी तमूल तूल तीयन दहन के । आछे मृग मदके अमोद उदगारे त्यों बहार दार मंजुल महीना अगहन के २१ तलप तनाओना अतूल मखतूलनसों तोसकदुलाईतूलतूननके लागेना । लागल चहूंधा तापतीयणा तपनतेजज्वालाभरे ज्वालन जगावै जुरि आगेना । तौलौ जगमोहन हजारों हरवासे हार काहूहिमवंतहोमें काहू भाँति भागेना । सारीकरि अ-

लगमकोचि सुकुमारी जोलौ उन्नत उरोज वारि प्यारी उर लागैना।२२ झांपनमों झापैलगीतापन तनूनपद कांपन करेजालागे अदना औ आलाके। आंगन अगेलन में आतप अतिये ता कछु छूटै ना पछैवा पछैह्यांयो न पालाके। दैवकी दोहाई महा दम्पति दिनोमें झरै दावन दवाई देरी दीरघ दुशालाके। दैदैउर उरज उतंग जग मोहनजू रंगरस राते माते मादिक मशालाके २३ आवत बधूके चहुंघा रहे हुकहूं आय गयो उहां हरि हिमवंत हमराही में। ज्यों ज्यों जग मोहनजू नाहक निहारी करी बसन बिथोरी हवैन रसना बनाहीमें। त्यों त्यों मतवारी पैान बसिके करेजा भरै छोरसिसि कोनमें समेटि अवराही में। दीपक बुझाइ देरी दीरघ दुशालन के दबकि दबाइ रहीं दबकि दबाही में २४ अंग सुखराय औ उसासन थमाय नेक हीयकोहि मंत वायबेधै चहुंघायजूटि। तासु दरशाय दशातोबिन मलीन अब सब सुख चायन को लीन्हों काम देव कूटि। खान पानको नशाय डालै ता बिरहपाय मूंदि पलकों का रहै लोगन ते दूरि कूटि। भूलिभूलि के कुपन्थ जाय सुनि प्यारी ताके कांटो गड़ि जाय पै न जाय तेरा ध्यान टूटि २५ बैठत उठत जात आवत सकारे सांझ कामके करारे बाण हिये डोलियतु हैं। देखैं बन बाग भले लागत भयावन से खान २ माहिं माना बिष घोरियतुहै। बाय के हिमन्त बाय बेधत दुखद काप छाबके करेजो क्षण माहिं छोलियतु है।

लखे कौन जाय ताहि विरह सताय तायो तो विन सहाय हायहाय बोलियतु है २६ बास पिय पास जाको अतिही हुलास ताको भोगन रसालरासरससर सायोहै। चक्र चौंधि देखिदेखि चकित चकोर चाहै शशिके समानसर शीतल सोहायोहै। बहतसमीरसीरी दहत हमारोअंग रहत न धीरयों अनङ्ग उमगायोहै । छलसों धर्यो नामअगहनगहन सर्मविरही गहन प्राण अगहनआयोहै २७॥ सवैया ॥ हेरुहिमंतहुलासिन हालहि माकरहेलिन को हरयाइकै। हारनहारन हीरनहारसे हीरो हरो हिम बिंदु बिछाइकै॥ श्रीरघुराजनऊखम-राख्योहि मारिउराइसि खींदि सिजाइकै। जायपराय लुकाय रही तबहेलिन के हियरे में हेराइकै २८ अभिराम हमामके धामनमें चहै केतो अराम लपेटि पटै। बिरचे बिधिकेते दुशाले बिशाले धरेतन में नहिं पालेकटै। रघुराज कहै शिखी सुरजहूँ न निवारिसकै हिय हारि हटै। क्षितिमें क्षनदामें छबीलीबिनाछतिया छपटै हिमको दपटै २९ ॥ कबित ॥ परत तुषार झार उठत अपार भार डारमों पहार पूस आँगन सुहातिहै । बीछे कैसे छौना भरे मानहुं बिछौना माँझ दिशहूबि-दिशि लागे घेरे घर घाति है। बीठल सुहित अतिगति मति भूलि जात चातक करात जब बोलै आधीराति है। बिरह नेरही राति पिय बिनरही राति आठैनिश राति तिय जाति पिय रातिहै ३० ब्रह्म यंत्र वारे भारे लपकें सुगंध तैसे आलदीप माल लाल जालन जरेरहे।

परमप्रवीणाबीणा लैलैसुखकार सरदारचीन २ रंगराग न भरेरहे । चूमि चंदवदन चपाय पाइँ पाइँमेलि उरज उतंग अंग अंगन भरेरहे । करदे करन हारे सरदे समीरन के जरदे दुशालनके परदे परेरहे ३१ प्यारी पिया पौढे परयंक पर सोहत हैं मोहन परसपर रस बतियां निकरि । आपसमें बेधेमननेह शरासनचढे तीक्षन कटाक्षन सों भौहैं धनुतानिकरि । राधामनमोहनजू अंगनि के संगनिसों पुलकित होय रहे लिपटि भुजानिकरि । सुखको न अन्त लह्योरजनी हिमंतऋतु कियो गुनवंत कन्त कामकी कलानि करि ३२ तरुनि तमोल रचि अंग रंग राजतहै उमंग अनंग संग साजे निज कंतको । द्विज बलदेवकहै हरषहिये अपार प्रमुदित वाद्यकार सुरताल तंतको । शीत सरसात तूल सेवत त्यों जातनेह उदितहै बातसुख शोभित सिमंतको । मोद अनुराग मन रङ्ग कवि बागम लखात बल भागमभो आगम हिमन्त को ३३ एकओर बानपंचबानको गहाइदीनो एकओर रणाप्रतिकठिन लखावतो । दोयाकर बीचदोयआकर बसाइ शीत भीत करै जेते प्रीति बाहर निबाहतो । बंशीधर कहै घरडगर नगर बीर लैकरि समीर रोम रोम निबसावतो । छूटतो नमान मन्त्र तन्त्र अरु यन्त्र कीन्हे जोनहिं हिमंत दूती कंतबनिआवतो ३४ औनिते अकासते अवासनते उदकते इंदुके उदैते आसुदेते उमड़ो परै । श्याम कवि मालन ते मनते मनीते मनमोहन के मोहले मनोजतेमड़ोपरै ॥ झांकती झरोखनते झंझाके

झकोरन ते झाड़नतेझारनते झूमि झुमड़ो परै । घान ते प्रसूनतेपरागते पहारनतेहारनते हेमतेहिमंत हूमड़ो परै ३५ ॥ सवैया ॥ देखभटू दिनरैन दशायहमैनसदा शर तानत तंतरी । शीत सो भीत भयो हियरा जियरागति कौन लखै बिनकंतरी । कीजैकहा बलदेवरहै तनप्राण प्रबोणलहैं गतिरंतरी।अंतरी जायकहों किहिसों गति कोन्हीकछू जसआये हिमन्तरी३६ नील निकुंज बनो रसपुंज चहूंदिशि हेमबितानहैताने। आछेपरे परदाम खतूल के तूलको चारु बिछायो बिछाने । कोलिकरैं गिरिधारन जू सँगलै तियकोमन आतशखाने । पाव कहीकी शिखान के संग अनंगहि पावक पूजत मानो ३७ सेजसजाई रजाई समेत जहाँ तहँ आई प्रियाजोसु अन्तकी । गाढ़सुराहै तुरन्त अंची तबकीनी शुरूकछु बात इकन्तकी । त्योंहरि तोप्रज सो हँसकै रसकै चस कौसिसके छबिवन्तकी । हूलै हिये झुकिझूलै सुमरति भूलै नहीं हमैंकेलि हिमन्तकी ३८ ॥ कवित्त ॥ आयोहै हिमन्त जोर जाड़ेके प्रसंगनसों रेशमके झंगनमें अंगन दुराये देत । कहैं नन्दराम त्यों हमामहूं न काम सरै धाम धाम आला पौन पालाको उसाये देत । तूल पेट पीठिन अंगीठिनमें डीठिलगी तरुणी बिहीन तन कम्प सरसाये देत । दोगुनो कहो तौ चित चौगुनो चुरात हेरिनौगुनो न सौगुनो समीर शीतनाये देत ३९ आसव निरालाभल भौन कि निकाला देत प्यालापर प्याला तोहू शीत सर पेटै लेत । कहैं नन्दराम जरै दीपन की

माखमलके पैंचिश्रा बिशाला धूमधाला भरपेटे लेत। दोहरे दुशाला ऊनशाला छीनशाला पट्टशाला छीट शाला छीटशाला भरपेटेलेत। बन्दकिये ताला तौपे तोलके मशाला उरलागें बेशवाला तोनपाला भरपेटे लेत ४० ॥

शिशिरऋतु के कवित्त व सवैया ॥

कवित्त। गिरे ब्योम बरफ़ भरफ़के सनाका चले मखमली गादीचांदी पेंचुआ लगेरहे। भनत दिवाकर दुशालाबो बिशाला आलाहरत कशाला रसख्याला तेपगेरहे। छातीसे लगाय छातीताती कुचथातीमिसि मैन मदमाती कर मातीमें जगेरहे। शिशिर के शीत- कृत भीतसमशीतचीत जीतलेत पालाजो सुबालाकेसँगे रहे १ सीरीभयो जल सुसमीर थलसीरी भयोसीरीआ- समान वानयान सीरी परिगे। भनत दिवाकर बसन वोदसन सीरी वदन सदन बनसीरी सबकरिगे। सुन्दर दुकूल सीरोतूल फूलमल सीरीपूल धूलराह वाहसीरी सम ठरिगे। शिशिर के शीतयहकीन्होहै अनीतइत शीतहै उरोज सकसीर संगलरिगे २ माणिक महलमें प्रमाणिक बिछाये सेजहीरनके हार तेज सेजपै धरे भ- ले। द्विज बलदेव त्योंहीं कंचन लतासी बाल घूरमन- मोद कै कपूर पङ्कमें मले। अमित अरामें भोगइतबहु जामें अरुशीत के तमामैंते समामैं जायके जले। शि- शिर की शीकरन सोई है बशीकरन हीकरन हेतु पियाते। करत हैं गले ३ पटुसों छपावैं प्रफुल्लित को

आदोआम अति अभिराम अग पूरैंजन कामरी। जासु संग पाथकै उमंग सांहरातेसब साते गुणगावैं शुभराग रङ्गवामरी। लखो आसुमन रहेहरि अनुरागि रटे द्विज शाखावर बाग जासु धामधामरी। शीतल सुभायचित्त याके मित्रहूको ध्याय सिसिरिमें सज्जनन सज्जन भे श्यामरी ४ सोहैं सरसोहैं सरसोहैं करि डारैं नैन लगैं सरसोहैं बिरहीको दिनरातिहै। अम्बर सुहावै औप्र-भावै बरहीको बर सीकर परत निशिसबको सिराति है। गावत हिंडोलैं गरनागरी गरीय गिरा कहूं कहूं कोकिलको काकली सुनातिहै। चन्दन दिखात कहूं दीनद्याल बन्दनमें निन्दतिहै पावसकै शिशिरसोहा-तिहै ५ बिथुना कँपावत है कांपति घनीसी आय सीसीना करावती करत अतिदीनाहै। रदना बुलावतहैं रदनिज पीसे सोई चन्दना स्रवत मुखचन्दको पसीना है। गिरिधर दास पीरो खेतना शरीर यह कञ्ज मुर-झाये ना निगाह भूमि लीना है। लेतसीरी सांसेकर श्यामसों प्रथम रति शिशिर न सरी यह नागरी नवी-नाहै ६ बाहर गयेते घर आवनलगेहैं लोग घरके बसे-यन पयान कियो साफ़ासो। ज्ञानिन को ज्ञान अरु ध्यानिनको ध्यान मान मानिनको मान फास्यो मृग मदनाफ़ासो। ख्यालकबिकहै प्याला बालाये दुहूनहो में सबहोने जान्यो ठीक आनँद इज़ाफ़ासो। ज़ोमदार जीवनको ज़ोमको जगैया बड़ो आया अब जाड़ोजग करन जुराफ़ासो ७ गाले अति अमल भराले तोशकों

में फेर ऊपर गलीचे जाल डाले बिछवाले अब। सेज पर सेजबन्द खूब खींचवाले खाले पान रसवाले औ गजक सजवाले सब। ग्वालकबि प्यारी को लगाले लिपटाले अङ्ग ओढ़िकै दुशाले में सजाले सिसिकाले जब। मंजुल मसालेमिले सुराके रसाले पीले प्यालेपर प्याले मिटै शीतके कसालेतब ८ आले रङ्गरङ्गकेतनाले दरवाजन में परदे मुंदालेवे झरोखे ज्योंन आवै पौन। चारोंओर गरमगुदाले बिछवाले गाले छाले धूपअगर अँगीठी दहकाले भौन। मंजुकबि खाले ज़री गजक चढ़ाले मद बीड़ियां चबालेभरी बिबिध मसालेजौन। भुजन फँसाले तिय उर लिपटाले अरे दुर्बाकि दुशाले येकसाले तूमिटाले क्यौंन ९ बिबिध बनातै कीमखाब की कनातै तामें दीरघ दुचोवैहैं सिचोवै इक हद्दीमें। चांदनी है चोबनपै परदे दरीचनमें दोहरे दुलीचे हैं ग़लीचे गोल गद्दीमें। ग्वालकबि भांति भांति भोजन हैं भामिनीहैं दीपहैं दुशालाहैं मसालेमैन मद्दीमें। चायके चुहदी साज़सेजपै बिहद्दी वै सकसीतरद्दी तबडूब्यो जाय नद्दीमें १० सुघर सजाई कोठरीनमें बिछाई सेज छतपिछवाई छाई गंमक कहा कहौं। मृगमद कुंकुम सिंचाई बीरी कोचभाई नशाकी पिलाई इनहूंतेशीतकादहौं। कहीं धधकाई कहीं मीठी अंगीठीकी आंच कहीं तो उढ़ाई दुशालाते कसाला लहौं। कहैनाथ होईहै जाडाको भजाईजबै तेरीया रजाई में रजाई ले रबकि रहौं ११ सुभग पलंगपै बिराजें नाथ साथ सब

विविध सिंगार साजि जेती पुरबालाहैं। ओढ़िकै दु-
शाला उर कंचुकी बिशाला ओढ़ि मोतिन की माला
ओरहारहू विशालाहैं। कंचन अँगीठी सों सुमीठीमीठी
धूमउठैं मनुकाम श्यामहेत रच्यो धूमजालाहैं। शोभन
भवन ऐते उंदित मसाला जामें तामें बिच केलि करैं
ओढ़िकै दुशाला हैं १२ शीशा के महल बीच कहल
हिमाचलकी पहल दुलाईवर्फ चहल कमालामें। चंदन
सों लागत कुरंग मार अंगन में अनल अँगीठी जिमि-
बारि हौदशाला में। लागत गलीचा ऊन शीतल सि-
मार तूल दीपक नक्षत्र रघुनाथ रसथालामें। बालाउर
बीचजातमालासी जुड़ातजात पालासम लागतदुशाला
शीतकालामें १३ चिड़िया चुहुचुहानी रजनी बिहानो
जानी प्रकटी प्रभात बानी गोपिन के गीतमैं। कालि
दास औचकसी सेजते उतरि प्यारी अनललगाईचली
चितै नवनीतमैं। गात अंगरात अलसात अलबेलीभांत
भावतो तजो न जात शिशिरके शीतमैं। फेर परयंक
पर ओठभर ओढ़िपट पीतमैं लपटि लपिटायरहीपीत
मैं १४ ॥ सवैया ॥ शीतसमै परदेशको पीय पयानसुनो
बह रोवन लागी। याऋतुमें हरिक्योंहूं रहैं घर देवता
पूजि मनावन लागी ॥ और उपाव तक्यो न कछू तब
साजिके बीनबजावनलागी। प्यारी प्रवीणभरेसुर मेघ
मलार अलापिकै गावन लागी १५ ॥ कवित्त ॥ चन्दछवि
पागिआगि औरैचले भानुभासि शीत जागि जाशिजल
ऐसे गरसत है। रदनको बोलें रवबदन बिकासैकौन नदल

की गौन रौन सूधो मस्सतहै। लागी जऊझांपैं भली झरकी झारापैं तऊ सेवकहू कांपैं न हुरुम्ब दरसतहै। दृढ बरसाला फोरि सालहू दुशाला फोरि सकल मशाला फोरि पाला बरसत है १६ शोशाके महलबीच कहल हिमाचलकी पहल तुलाई बर्फ चहल कसाला मैं। चन्दनसो लागत कुरंग सार अंगनमें अगिन अंगीठी जिमि बारीहौज सालामैं। लागत गलीचा ऊन शीतल सिवारतूल दीपक नक्षत्रसे गनेश रतिशालामैं। बाला उरबीच शीत मालासी जुडात जात पालासम लागत दुशालाशीतकाला मैं १७ भानुशीतभानुकी समान लघुमानभयो बारी बरषानसों कृशानहूकी माला मैं। दीपगन बारनभयोहै पौन बारनके सेवकसितारन सुतारनकी मालामैं। माच्योफूल फूल ह्वै अतूल तूलहूको तूल तैसो मखतूल भो गलीचन के जालामैं। मद तमशाला कौनवाला बिन बालाहोति पालासम लागत दुशाला शीतकाला मैं १८ पौन प्रबिशौन परे परदे दियेहैं पट आतशी अवास आसपासके भरेरहैं। दिये दीप झुंडन दिवालन दिवालगीर फरसी फनूस चहूंरा- भनधरेरहैं। अगरकी धूप सेज अम्बर अतरछूप सेवक मशाले सौज समके करे रहैं। छपटे मनोज तेऊ झपटे शिशिर शीत छपटे दुशालनमें लपटेपरेरहैं १९ शिशिर तुषारके बुखार सो उखारत है पूसबीते होत सूने हाथ पांवठरिके। द्यौसकी छोटाईकी बड़ाई बरनी न जाइ सेनापति गाई कछु सोचिके सुमिरिके। शीतते सहस

करसहस चरन ह्वै के ऐसेजात भाजि तमआवतुहै थिरि के। जौलौं कोक कोकी को मिलत तौलौं होत रात कोक अधबीचहिते आवतुहै फिरिके २० देतहै नकल एकोपल एहो रघुनाथ पौन पछिवाँहैं वहै अङ्गन छिलतसो । पानीकी कहानी सोतो जाति न बखानीकछू नेक परसत पानि पाय पघिलत सो । कैसेके हिमन्त अन्त शिशिरको ह्वै है पल पटके टरत पेट पीठि सों मिलत सो । जबसों उयो है आज तबसों हे देखिसखी तरनिको तेज शीत आवत गिलत सो २१ शिशिर में शशिको स्वरूप पावै सविताहू घामहूं में चाँदनी की द्युति दमकति है । सेनापति होत शीत लता है सहस गुनी रजनीको झाँईं बासरमें झमकतिहै । चाहत चकोर सूर ओर दृगछोर करि चकवा की छाती तजि धीर धसकति है । चन्दके भरमहोत मोदहै कुमोदिनि को शशि शङ्क पङ्कजनी फूलिना सकति है २२ धायो हिमदल हिमभूधर ते सेनापति अङ्ग अङ्ग जगथिर जङ्गम ठिरतहै । पैयेना बताई भाजि गई है तताई शीत आयो आततायी छिति अम्बर घिरतहै । करतहै त्यारी भय करिके उज्यारीहीको घाम बारबार बैरीबेर घमिरतहै । उत्तरते भाजि सूर शशिको स्वरूपकरि दक्षिण के छोर छिन आधक फिरतहै २३ थिरचर सकलसबल भयभीत ह्वै कै जगत जुराफा सम गति दरसतहै । ठौर ठौर बरखा ज्यों बरषै बरफपुंज आलय हिमालय के चहुंघा सरसतहै । उदित प्रभाकर की मुदित मयखें

पुर कुहूमी पियपधर कैसी परसतहै। सोचित सरोजन को पोचित वदनपेखि रोचित कुमोदिनिके मोद बरसतहै २४ अब आयो माह प्यारो लागतहै नाहिंरवि करतन दाह जैसो अवरेखियतुहै। जानिये न जातबात कहत बिलात दिन सराासो न ताते तनको विशेखियतु है। कलप सीरात सोते सोयेना सिरातकेहूं सोइसोइ जागे पैन प्रात पेखियतु है। सेनापति मेरे ज्ञान दिनहूं ते रातभई दिन मेरे ज्ञान सपनेमें देखियतु है २५ गिल गिली गिलमें गलीचाहैं गुनीजनहैं चाँदनी हैं चिकैंहैं चिरागनकी मालाहैं। कहै पदमाकर त्यों गजकगिजा हैं सजी सेजहैं सुराहीहैं सुराहैं अरु प्यालाहैं। शिशिर के पालाको न ब्यापत कसाला तिन्हें जिनके अधीन एते उदित मशालाहैं। तान तुकतालाहैं विनोद के रशालाहैं सुबालाहैं दुशालाहैं बिशाला चित्रशालाहैं २६ सोनेकी अँगीठिनमें आगिन अधूम होय होय धूमधारहू तो मृगमद आलाकी। पौनको न गौन होय भरक्यो सुभौन होय मेवनके खौनहोय डिबियाँ मसाला की। ग्वाल कवि कहैहूर परीसो सुरङ्गवारी नाचतीं उमङ्ग सों तरङ्गतान तालाकी। बाला की बहार औ दुशाला की बहार आई पालाकी बहारमें बहार बड़ी प्याला की २७ बरु अति रुचिर विचित्र चित्रशाला बीच आनँद विशाला सों दुशाला लह लैसहू। दीपन की बस्तु जे उदीपन की दिब्य दिब्य लीजिये मँगायके मजाय सेज सैसहू। कहै श्यामसुन्दर सुजान सुनेसोच

तऊ पीकोहि लोंगे फागफाग सुकेसहू । उरज कसीसी बाल ताकी रति सीसी बिना सिंगार के सीत की न सीसी मिटे केसहू २८ झर झर झाँपे वड़े दरदर ढाँपे तऊ थरथर काँपे मुख बाजत बतीसी जात । फेरपसमीनन के चौहरे गलीचा तापै सेज मखमली बिछी सोऊ सरदीसी जात । ग्वालकवितैसे मृगमदसों भुकाये भौन ओढ़ि ओढ़ि झारभार आगिहू कपीसी जात । छाके सुरासीसी तौलौं सीसीना मिटैगी जौलौं उरजकसीसी छाती छातीसों न पीसीजात २९ आयो कन्थकाकोघायो आयोहै हिमालयते संगमें सहाईलैसुरभि भयकारीके । कहै सिवराम याकेपाये हैं सुतीनोंलोक ओक ओक आपनो प्रतापजोरजारीके । तेलतूलतपनसुऊन हून जेरकीने येई दोऊ बोररहे जगकी जिवारी के । सुन्दर सुबत ऊंचे आड़ेये अचल सूर जाड़ेको सुआड़े गाढ़े ठाढ़े कुचप्यारीके ३० बेरबेर ढांकें बड़ेडर डर झांकैंतऊ कड़कड़ दांत बाजबाज जुरिजुरि जात । नेकहोत न्यारे तापै थरथर कांपैंप्यारे ओढ़ओढ़साल माखहूते लुरि लुरिजात । शोभन भनत भागभाग आग आगेजात लखि झारभार पुनि पुनि मुरि मुरिजात । शिशिरके शीतमें अनीत शीत मानभीत सेज में पुनीत भीत दोऊ दुरि दुरिजात ३१ खंभेदार रावटी अनाती लाल डेरनमें आगर अँगीठी करी सीतकी मनाई है । कहै सिवराम पसमीनेकी बिछाइ तापै तोसक के रूप सेजसरस सजाई है । मोहकसी अलकैं अनूप घीअफूल

छत्र संजितको शोरकामनौवत बजाईहै। प्यारेको मि-
लाप प्यारी पादशाही पाईरीझिसौतिनको शालैंदई
सखिन रजाईहै ३२ सुंदर सुखदपद भंजुमन तजिमद मंद
जानि मेरोकहो शरदअनन्दको। द्विजबलदेव कहै दरदर
सदनमें मदनके दूत भेजिदीन्हे पतनन्दको। दलित दुकूल
द्रुमकदमकलिंदीकेहैं इन्दीवर बदन दुरावनापसन्दको।
दीपति दुगुणा देश दिशा दशहूमें देत दीरघ दराजदिल
देखियत चन्दको ३३॥ सवैया॥ मल्लिका मालतीजाती
जुही अरु सेवती सेनलै जीतन आसी। माधुरी मंजुम-
रीचिन बानन मारिकै मेघन दीन्हे निकासी। चारु
चकोरन चैन बढ़ाय बिकास करावत केरव रासी।
रुक्मणीरावरी कीरति रूपसों आयोमयंक अकाश
बिलासी ३४ शारदी की रजनी में प्रिया रजनीपति
पास जनीनको प्यारे। सारी मरीचिन बीचिनते नव-
लाके नगीचिन को दुखहारे। भायत हैं रघुराज हमें
शरदै सुख दे तऊ होय अगारे। जो बिरहीनन दीनन
के उर वारिधि मेंबड़वानलबारे ३५॥ कवित्त॥ बनउप-
बन निरझरसर शोभासने अम्बर अवनि कलबल्ल बर-
सावनी। हंसजल रंचित खचित थलबननिताराणपत्ति
सरित जुन्हाई सुखदादनी। ऋषिनाथ मालती मुकुन्द
कुंद कुसुमित बास पारिजात पारिजातावलि पावनी।
मन अरुझावनी रसिक रास रसरंग भावनी शरद रैनि
शरदसुहावनी ३६ तालनपै तालपै तमालनपै मालनपै
वृन्दाबनबीथिन बहार बंशीवटपै। कहै पदमाकर अ-

खराडरास मंडलपै मंडित उमंडि महाकालिंदीकेतटपै। क्षितिपर छानपर छाजत छतानपर ललित लतान पर लाडिली के लटपै । आई भले छाई यह शरद जुन्हाई जिहिपाई छबि आजुहि कन्हाई के मुकुटपै ३७ ॥ सबैया ॥ महि मल्लिका मालती जाती जुही शुचिसेवती प्राण पियासी भई । क्षतांदाकर की करकाती भई बरषानि किती बरषासी भई । नँदराम जू चांदनी चौकनमै चहुंओर ले भानु प्रभासी भई । अँखियान में तौ बरषासी भई बरषान किती बरषासीभई ३८खनक चुरीन कात्यों ठनक मृदंगनकी रुनुक झुनुक सुरनूपुर के जालकी। कहै पदमाकरत्यों बांसुरीकी धुनिमिलि रह्यो बँधि सरस सनाको एक तालको । देखतै बनत पैन कहत बनैरीकछु बिबिध बिलासयों हुलास इहि ख्यालको । चंदछबिरास चांदनीकोपरगास राधिका को मदहास रास मराडल गोपालको ३९ शरद रयन अरु निर्मल प्रकाश जानि कान्ह यमुनाकेतट बांसुरी बजाईहै । राग रागिनी छतीसों ताहिमें प्रवेश करि तालको बँधान सुर तीनलोक छाई है । माहेशग औ गणेश बिधि लोकपाल सब षोड़श सहस गोपी हुनि उठिधाईहै। पायकै कन्हाई जोने रहस मचाय नित यामिनी बढ़ाई षटमास को बिताई है ४० अकल अरीलसाते मंजुलनलिन्दजल अमलअमन्द चन्द्रपूरण कदनहै । अधर अनोखे अरुणारेबंधु जावकसे चांदनी से हासत्यों सितारेसे रदन है । खंजनसे माते मन रंजन

चकोर से अञ्जन बनै न नैन सुखमा सदन है। शरद मरालीसी मृनालीसी मिलीसी आली कैसो जगमोहन सोहावन बदनहै ४१ दर्सकि गईरी देह दौरिकै दुरावै काहि जारती जुरासी ज्वाल जालिम जुन्हैयाकी। शीतल सरोजनकी पांखुरी बिछाई सेज लागती अंगारसी अनोखी अँगनैयाकी। तीर कैसो तीयगा समीर सरिताकेबीर बीतिहै न योंहीं निशा शरद समैयाकी। फांसुरी गरेकी बाजी बांसुरी बिसासी कैसी बियकी भरीसी जगमोहन कन्हैया की ४२ रासको बिलास मृदुहासकी सुरति जबऐहै तब मोहनसों क्यों न मन उच्चाटिहै। चांदनी शरदकी बढ़ाइहै दरददेह सुधिकी करद लगे क्यों न उर फाटिहै। बैठि बनबेली बीच मेली भुजलतातांहि श्यामकराठहेली कही सेली किमि ठाटिहै। धारि जब मालाको बिसारि नन्दलालऊधो बाला मृगछाला ओढ़ि कैसे दिनकाटिहै ४३॥

इतिश्रीषटऋतुकाव्यसंग्रहसम्पूर्णम्॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने मुक़ाम लखनऊ में छपा
सितम्बर सन् १८८६ ई०॥